राजनीति विज्ञान इकाई -2 ई-पुस्तिका

अरस्तू (384–322 ई.पू.)

परिचय:

- उनका जन्म स्टैगिरा में हुआ था, जो चाल्सीडिस में एक यूनानी उपनिवेश था। उनके पिता, निकोमाकस , मैसेडोन के राजा अमीनटास तृतीय के निजी चिकित्सक थे ।

- राजनीतिक घटनाओं के अध्ययन के लिए उनके व्यवस्थित और अनुभवजन्य दृष्टिकोण के कारण उन्हें "राजनीति विज्ञान के जनक" के रूप में जाना जाता है।

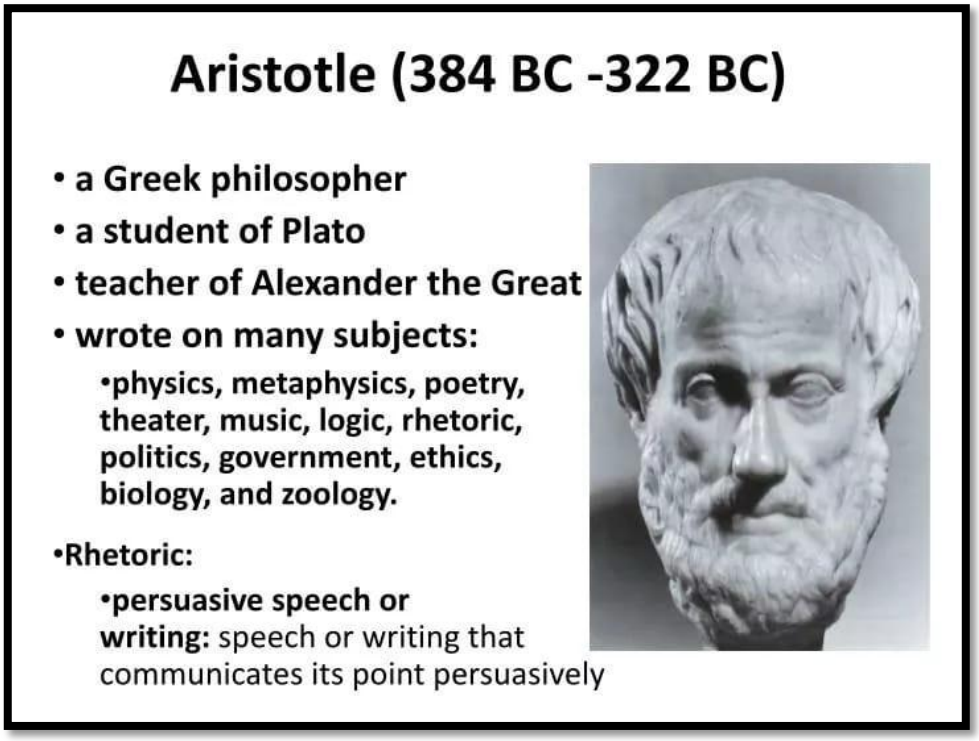

- प्लेटो के एक प्रमुख शिष्य के रूप में उन्होंने एथेंस में प्लेटो अकादमी में लगभग दो दशकों तक अध्ययन किया, तथा अपने गुरु के विचारों को आत्मसात करने के साथ-साथ उनकी आलोचना भी की।

- अरस्तू ने ग्रीक दुनिया भर में व्यापक यात्रा की तथा विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों और संविधानों का गहन अध्ययन और तुलना की।

- उन्होंने मैसेडोन के राजा फिलिप द्वितीय के पुत्र सिकंदर महान को शिक्षा दी तथा भावी विजेता के मस्तिष्क को आकार दिया।

- बाद में, उन्होंने एथेंस में अपनी स्वयं की प्रभावशाली अकादमी, लिसेयुम की स्थापना की, जहाँ उन्होंने व्याख्यान दिए और प्रचुर मात्रा में लेखन किया।
-
- उनकी मौलिक कृति, *राजनीति* , राजनीतिक दर्शन की आधारशिला बनी हुई है, जो राज्य की उत्पत्ति और कार्यों का विश्लेषण करती है।

प्रमुख उद्धरण:

- "राज्य, व्यक्ति से पहले है।" यह मानव विकास में राज्य की मौलिक भूमिका में उनके विश्वास को रेखांकित करता है।
- "राज्य एक प्राकृतिक संस्था है।" उन्होंने राज्य को एक कृत्रिम रचना के रूप में नहीं, बल्कि एक जैविक विकास के रूप में देखा।
- "समाज के बिना मनुष्य या तो पशु है या भगवान।" यह मनुष्य की अंतर्निहित सामाजिक प्रकृति को उजागर करता है।
- "अन्याय तब उत्पन्न होता है जब समान लोगों के साथ असमान व्यवहार किया जाता है और तब भी जब असमान लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाता है।" यह न्याय के बारे में उनकी सूक्ष्म समझ की ओर इशारा करता है।
- "राज्य जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए अस्तित्व में आता है और अच्छे जीवन के लिए अस्तित्व में बना रहता है ।" इससे राज्य का उद्देश्य स्पष्ट होता है।

वर्ग	विवरण
जन्म - मृत्यु	384–322 ई.पू.
जन्मस्थल	स्टैगिरा, ग्रीस
इस नाम से जाना जाता है	राजनीति विज्ञान के जनक
प्रमुख स्कूल	प्लेटो अकादमी (छात्र), लिसेयुम (संस्थापक)
प्रमुख पुस्तकें	*राजनीति, निकोमैचेन नैतिकता, यूडेमियन नैतिकता, काव्यशास्त्र*

से प्रभावित	प्लेटो
प्रभावित	पश्चिमी राजनीतिक विचार, सिकंदर महान, अनगिनत दार्शनिक
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	राज्य का सिद्धांत, संविधानों का वर्गीकरण, स्वर्णिम मध्य, न्याय, गुलामी, क्रांति, सर्वोत्तम संभव राज्य

- **प्रमुख पुस्तकें:** *राजनीति, निकोमैचेन नैतिकता, यूडेमियन नैतिकता, काव्यशास्त्र, बयानबाजी, तत्वमीमांसा, आत्मा पर।*

अरस्तू की प्रमुख पुस्तकें

---

1. राजनीति

- **लिखित:** लगभग चौथी शताब्दी ई.पू.
- **मुख्य विषय:**
  - मनुष्य एक "राजनीतिक प्राणी" है।
  - सरकारों का वर्गीकरण (राजतंत्र, अभिजाततंत्र, राजनीति बनाम अत्याचार, कुलीनतंत्र, लोकतंत्र)।
  - *पोलिस* (नगर-राज्य) में सद्गुण और अच्छे जीवन का महत्व ।
  - राजनीति नैतिकता के अधीन है।

---

2. निकोमैचेन नैतिकता

- लिखित: लगभग 350 ई.पू.
- **मुख्य विषय:**
  - सद्गुण नैतिकता, स्वर्णिम मध्य, तथा *यूडेमोनिया* (उत्कर्ष या खुशी) की अवधारणा पर चर्चा करता है।
  - राजनीति के लिए आधार के रूप में नैतिकता।
  - नैतिक चरित्र और तर्क पर जोर देता है।

---

3. तत्वमीमांसा

- **लिखित:** लगभग 340 ई.पू.
- **मुख्य विषय:**
  - अस्तित्व और वास्तविकता का अध्ययन ("अस्तित्व के रूप में अस्तित्व")। [5]
  - पदार्थ, रूप और पदार्थ, कारण और संभाव्यता का सिद्धांत।
  - अचल गतिमान (ईश्वर) की अवधारणा प्रस्तुत की। [6]

---

4. बयानबाजी

- **लिखित:** लगभग 330 ई.पू.
- **मुख्य विषय:**
  - सार्वजनिक भाषण और राजनीति में अनुनय की कला।
  - *एथोस* (विश्वसनीयता), *पाथोस* (भावना), और *लॉगोस* (तर्क) का अन्वेषण करता है ।

---

5. काव्यशास्त्र

- **लिखित:** लगभग 335 ई.पू.
- **मुख्य विषय:**
  - नाट्य सिद्धांत का सबसे पुराना जीवित कार्य. [7]
  - त्रासदी, रेचन और नाटक की संरचना का विश्लेषण करता है। [8]

---

6. ऑर्गेनन (तर्क पर कार्यों का संग्रह) [9]

- **इसमें शामिल हैं:**
  - *श्रेणियाँ*
  - *व्याख्या पर*
  - *पूर्व विश्लेषण*
  - *पश्चवर्ती विश्लेषण*
  - *विषय*
  - *कुतर्कपूर्ण खंडन* [10]
- **मुख्य विषय:**
  - अरस्तूवादी तर्कशास्त्र (न्यायवाक्य, निगमनात्मक तर्क) का आधार।
  - वैज्ञानिक जांच और तर्कसंगत तर्क के लिए विधि [11]

राज्य का सिद्धांत:

- **प्राकृतिक संगठन:** राज्य प्राकृतिक वृद्धि और विकास का परिणाम है, जो परिवार से शुरू होकर गांव और अंत में राज्य में बदलता है। यह कोई कृत्रिम रचना नहीं है।
- यह प्रगति मानवीय आवश्यकताओं और क्षमता की बढ़ती जटिलता और पूर्ति को दर्शाती है।
- **व्यक्ति से पहले:** राज्य वैचारिक और कार्यात्मक रूप से व्यक्ति से पहले है क्योंकि मनुष्य स्वाभाविक रूप से सामाजिक है और अलग-थलग रहने पर वह आत्मनिर्भरता प्राप्त नहीं कर सकता है।
- संपूर्ण (राज्य) अपने भागों (व्यक्तियों) से उनके अर्थ और कार्य के लिए अनिवार्य रूप से पहले है।
- **संघों का संघ:** राज्य सर्वोच्च और सबसे व्यापक संघ है, जिसमें परिवार और गांव जैसे अन्य सभी संघ शामिल हैं।
- इसका लक्ष्य सर्वोच्च भलाई है, जो अधीनस्थ संघों के उद्देश्यों से कहीं अधिक व्यापक है।
- **जीव की तरह:** व्यक्तियों को राज्य का हिस्सा माना जाता है, शरीर के अंगों की तरह।
- वे अपना महत्व और कार्य राज्य की सदस्यता से प्राप्त करते हैं; अलगाव उन्हें अपूर्ण बना देता है।
- **आत्मनिर्भर संस्था:** परिवार या गांव के विपरीत, जो केवल आंशिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, राज्य आत्मनिर्भर है।
- यह अपने नागरिकों को पूर्ण एवं अच्छे जीवन के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं प्रदान करता है।
- **विविधता में एकता:** राज्य का उद्देश्य विविध तत्वों और व्यक्तियों को एक सामंजस्यपूर्ण समग्रता में लाना है।
- यह कठोर एकरूपता थोपने का प्रयास नहीं करता, बल्कि मतभेदों का संतुलित एकीकरण करना चाहता है।

संवैधानिक सरकार:

- **संविधान:** राज्य के कार्यालयों की व्यवस्था, विशेष रूप से संप्रभु शक्ति को परिभाषित करता है।
- यह निर्धारित करता है कि कौन शासन करेगा, राज्य की मौलिक प्रकृति क्या होगी, तथा उसके नागरिकों के लिए जीवन-शैली कैसी होगी।

Join our GROUP so that you can get all the study updates on time and first.

DR. PS YADUVANSHI CLASSES

click here

DON'T SCROLL, JOIN FIRST

+91 8559876786 +91 9982735777

DR. PS YADUVANSHI

CANTRE OF EXCELLENCE

COMPLETE STUDY MATERIAL COURESE

- UNITWISE NOTES BOOKLESTS
- ONELINERS BOOKLET
- MODEL TEST PAPERS
- MCQ BANK BOOKLET
- TOPICWISE NOTES BOOKLET
- QUOTATION BOOKLET
- KEY TERMS BOOKLET
- IMP UNITWISE BOOKS /AUTHOR/YEAR BOOKLET
- PREVIOUS YEARS SOLVED PAPERS
- WEEKLY CURRENT UPDATES

Course Prepared BY
DR. PS YADUVANSHI SIR
Double JRF/3 Times NET
(99.88 perncentile in Dec 19 UGC NET)
1500+ selections in NET/JRF/SET/PGT/ASST. PROF

ENGLISH AND HINDI MEDIUM AVAILABLE

FREE DELIVERY
CASH ON DELIVERY
LOW PRICE
TRUSTED

DR. PS YADUVANSHI CLASSES

+91 8559876786 +91 9982735777

- **वर्गीकरण (संख्या नियमन और लक्ष्य के आधार पर):**
  - **सामान्य रूप (सामान्य भलाई के लिए नियम):**
    - राजतंत्र: एक गुणी व्यक्ति का शासन।
    - अभिजाततंत्र: कुछ गुणी व्यक्तियों का शासन।
    - राजनीति: कई लोगों द्वारा शासन, हितों में संतुलन (अक्सर मध्यम वर्ग)।
  - **विकृत रूप (स्वार्थ के लिए नियम):**
    - अत्याचार: किसी एक व्यक्ति द्वारा स्वार्थी शासन (राजतंत्र का विकृत रूप)।
    - कुलीनतंत्र: कुछ धनी लोगों द्वारा स्वार्थी शासन (कुलीनतंत्र का विकृत रूप)।
    - लोकतंत्र: गरीब जनता द्वारा स्वार्थी शासन (राजनीति की विकृति)।
- **सर्वोत्तम स्वरूप (आदर्श):** राजतंत्र, यदि कोई सर्वोच्च गुणी व्यक्ति मिल जाए, तो सैद्धांतिक रूप से सर्वोत्तम है।
- हालाँकि, मानवीय भ्रांतियों को देखते हुए, सद्गुणी अभिजात वर्ग की भी अत्यधिक प्रशंसा की जाती है।
- **सर्वोत्तम विकृत रूप (सबसे सहनीय):** लोकतंत्र, अपनी खामियों के बावजूद, विकृत रूपों में सबसे कम बुरा माना जाता है।
- यह एक हद तक सामाजिक समानता की ओर प्रवृत्त होता है, जो इसे अत्याचार या अति कुलीनतंत्र की तुलना में अधिक स्थिर बनाता है।
- **राजनीति/लोकतंत्र संबंधी मुद्दे:** कुलीनतंत्र में अमीरों द्वारा गरीबों पर अत्याचार किए जाने का, या लोकतंत्र में गरीबों द्वारा अमीरों को लूटे जाने का खतरा बना रहता है।
- **समाधान:** मिश्रित सरकार (राजनीति) अक्सर सबसे व्यावहारिक सर्वोत्तम राज्य होती है। यह अमीर/योग्य लोगों को महत्वपूर्ण पद प्रदान करती है।
- यह गरीबों के लिए भी कुछ भागीदारी सुनिश्चित करता है, जिनका चयन अक्सर चुनाव या लॉटरी के माध्यम से किया जाता है, जिससे विभिन्न वर्ग हितों में संतुलन बना रहता है।

सर्वोत्तम सम्भावित राज्य (विशेषताएँ - प्रायः राजव्यवस्था का संदर्भ):

- **स्थिर:** एक संतुलित संविधान के माध्यम से प्राप्त किया जाता है जो अतिवाद से बचता है और समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करता है।
- एक ऐसा राज्य जो आंतरिक संघर्ष को सहन कर सके और उसका प्रतिरोध कर सके, महत्वपूर्ण है।
- **उदारवादी:** इसके प्रावधान और कानून न तो बहुत कठोर होने चाहिए और न ही बहुत नरम।

- इसमें एक वर्ग को अन्य वर्ग पर अत्यधिक तरजीह देने से बचना चाहिए तथा बीच का रास्ता सुनिश्चित करना चाहिए।
- **सर्वाधिक स्थिर राजनीति:** वह राज्य जहां मध्यम वर्ग का प्रभुत्व होता है, उसे सर्वाधिक स्थिर और सुप्रशासित माना जाता है।
- मध्यम वर्ग अमीरों के अहंकार या गरीबों की ईर्ष्या से कम प्रभावित होता है, जिससे एक प्राकृतिक संतुलन बनता है।

- **स्थिरता के कारक:**
  - **जनसंख्या:** बहुत अधिक (शासित करने में कठिन) या बहुत कम (आत्मनिर्भर न हो) नहीं होनी चाहिए।
  - यह अच्छी गुणवत्ता का होना चाहिए, अर्थात नागरिक स्वस्थ, सक्षम तथा मानसिक और शारीरिक रूप से विकसित होने चाहिए।
  - **आकार/स्थान:** क्षेत्र आत्मनिर्भरता के लिए पर्याप्त बड़ा होना चाहिए, लेकिन इतना छोटा भी होना चाहिए कि नागरिक एक-दूसरे को जान सकें।
  - इसका स्थान व्यापार, संचार और विशेषकर बाहरी खतरों से रक्षा में सहायक होगा।
  - **लोगों का चरित्र:** नागरिकों को देशभक्त, राज्य की रक्षा के लिए तत्पर, बुद्धिमान और समझदार होना चाहिए।
  - उत्साह (उत्तरी लोगों की तरह) और कौशल (एशियाई लोगों की तरह) का संयोजन आदर्श माना जाता था (जैसा कि यूनानियों में था)।
  - **वर्ग:** अरस्तू ने कई वर्गों की पहचान की: कारीगर, कृषक, योद्धा, धनी, पुजारी और प्रशासक।
  - उन्होंने विवादास्पद ढंग से तर्क दिया कि कारीगरों और कृषकों (हाथ से काम करने वाले) को नागरिक नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनके काम में सदाचार के लिए कोई अवकाश नहीं होता।
  - **शिक्षा:** राज्य के लिए एक अच्छी नींव रखने के लिए आवश्यक; यह लोगों को नैतिक और अच्छे नागरिक बनाती है।
  - शिक्षा सार्वजनिक होनी चाहिए तथा उसका उद्देश्य सद्गुण और नागरिक उत्तरदायित्व का विकास करना होना चाहिए।

क्रांति का सिद्धांत:

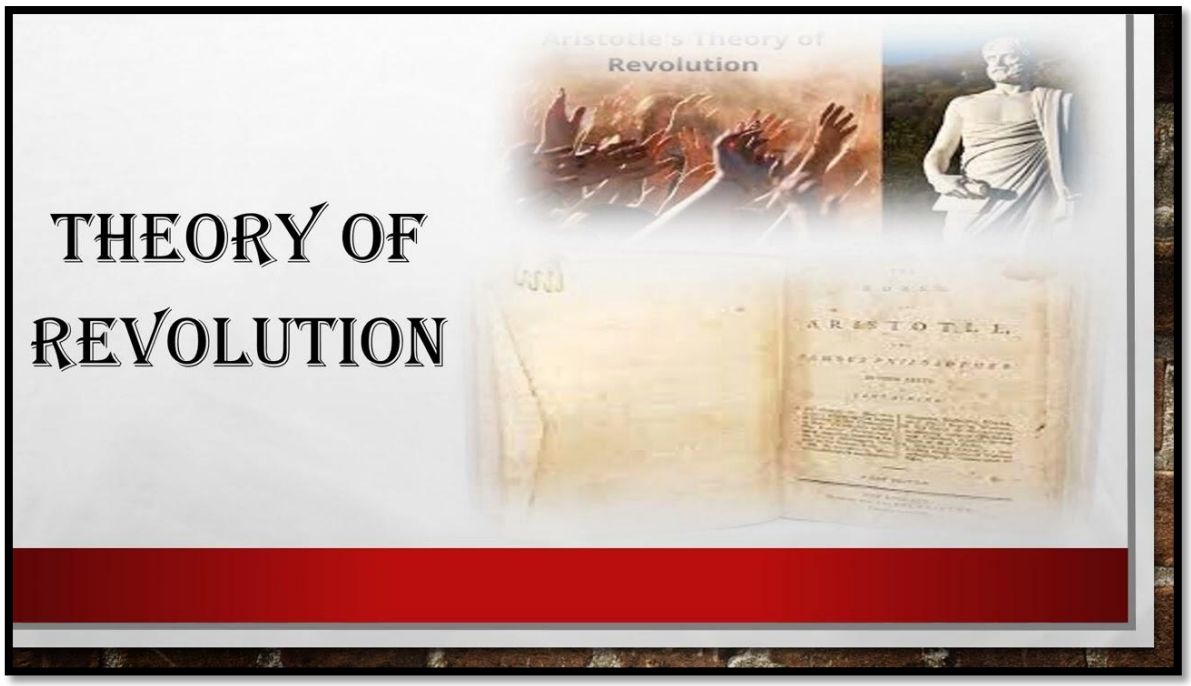

○ क्रांति के प्रकार:

- संविधान या सरकार के स्वरूप में पूर्ण परिवर्तन।
- सत्तारूढ़ कार्मिक में परिवर्तन, भले ही संविधान बना रहे।
- कुलीनतंत्र को और अधिक कुलीनतंत्रीय बनाना या लोकतंत्र को और अधिक लोकतांत्रिक बनाना (मौजूदा स्वरूप को तीव्र करना)।
- राज्य के भीतर किसी विशिष्ट संस्था या कार्यालय को बदलना।
- किसी विशेष समूह या गुट को लक्ष्य बनाना।

○ क्रांति के कारण:

- **सामान्य कारण:** समानता के लिए सार्वभौमिक जुनून, चाहे वह संख्यात्मक या आनुपातिक समानता हो।
- लोग तब विद्रोह करते हैं जब उन्हें लगता है कि सत्ता या वस्तुओं में उनका हिस्सा उनके कथित मूल्य के अनुरूप नहीं है।
- **विशेष कारण:** लाभ और सम्मान का प्रेम (अपने हिस्से से अधिक की इच्छा)।
- (दंड या अन्याय का) भय, कुछ व्यक्तियों की अनुचित प्रमुखता या शक्ति, तथा पद प्रदान करने में लापरवाही।
- छोटे-मोटे बदलावों की उपेक्षा (जो बढ़ते जा सकते हैं), पदों या सम्मानों का असमान वितरण।
- शासकों द्वारा सत्ता का दुरुपयोग, स्पष्ट अन्याय, तथा कार्यालयों में लापरवाह या भ्रष्ट भर्ती।

- अवांछित सार्वजनिक व्यय, वर्गों या समूहों के बीच ईर्ष्या की भावनाएँ, तथा आप्रवासन से उत्पन्न मुद्दे।
- सत्ता में बैठे लोगों द्वारा बल का अतार्किक प्रयोग भी विद्रोह को भड़का सकता है।
- **विशिष्ट रूप:** लोकतंत्रों में, क्रांतियां अक्सर धनी लोगों पर हमला करने वाले जनोन्मादियों की ज्यादतियों से उत्पन्न होती हैं।
- कुलीनतंत्र में, वे अभिजात वर्ग के दमनकारी और अत्यधिक प्रतिबंधात्मक शासन से उत्पन्न होते हैं।
- अभिजात वर्ग में, शासक वर्ग के बीच ईर्ष्या या योग्य व्यक्तियों का बहिष्कार अस्थिरता को जन्म दे सकता है।

○ क्रांति की रोकथाम:

- नागरिकों में कानून के प्रति आज्ञाकारिता की भावना पैदा करें; उन्हें संविधान की भावना और लाभों के बारे में शिक्षित करें।
- शासकों को छोटे-छोटे परिवर्तनों और उल्लंघनों पर भी सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए, क्योंकि वे बड़े उथल-पुथल का अग्रदूत हो सकते हैं।
- अचानक या व्यापक परिवर्तन से बचें जो राजनीतिक व्यवस्था को अस्थिर कर सकते हैं।
- किसी एक व्यक्ति या एक समूह के हाथों में बहुत अधिक शक्ति संकेन्द्रित होने से बचें।
- यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सार्वजनिक पद सभी योग्य नागरिकों के लिए सुलभ हो; चयन योग्यता और निष्ठा के आधार पर होना चाहिए।
- भ्रष्टाचार और असंतोष को रोकने के लिए राज्य के वित्त पर सार्वजनिक नियंत्रण और पारदर्शिता बनाए रखें।
- विभिन्न समूहों के योगदान को मान्यता देते हुए, न्यायोचित ढंग से पद और सम्मान वितरित करें।
- छोटी लगने वाली घटनाओं या शिकायतों को नजरअंदाज न करें, क्योंकि वे बढ़ सकती हैं।
- विदेशी हस्तक्षेप या आंतरिक षड्यंत्रों को रोकने के लिए बाहरी लोगों और संभावित विध्वंसक तत्वों पर सावधानीपूर्वक नजर रखें।
- सबसे महत्वपूर्ण निवारक उपाय यह है कि सरकार अपने शासन वाले लोगों का विश्वास और सद्भावना हासिल करे।

गुलामी का सिद्धांत:

- **आधार:** अरस्तू ने दासता को नागरिकों के "अच्छे जीवन" के लिए आवश्यक माना, जिससे उन्हें बौद्धिक और राजनीतिक गतिविधियों के लिए अवकाश मिल सके।
- उन्होंने दासों को "जीवित उपकरण" या जीवित संपत्ति के रूप में देखा, जो निर्जीव संपत्ति से अलग थी।
- उन्होंने तर्क दिया कि ब्रह्माण्ड श्रेष्ठ (तर्क/आत्मा) और निम्न (भूख/शरीर) प्राणियों के पदानुक्रम द्वारा संरचित है।
- श्रेष्ठ (स्वामी, जो तर्क से युक्त होता है) को स्वाभाविक रूप से निम्नतर (दास, जो शारीरिक शक्ति से युक्त होता है) पर शासन करना चाहिए।

- **औचित्य:**
  - स्वामियों के पास बौद्धिक शक्ति और दूरदर्शिता होती है, जबकि दासों के पास शारीरिक श्रम के लिए उपयुक्त शारीरिक शक्ति होती है।
  - स्वामी और दास का यह संयोजन घर के समुचित संचालन के लिए तथा राज्य के लिए भी आवश्यक माना जाता है।
  - दासता को स्वामी के बौद्धिक और नैतिक विकास के लिए आवश्यक माना जाता है, क्योंकि यह उसे तुच्छ कार्यों से मुक्त कर अवकाश प्रदान करती है।
  - ऐसा कहा जाता है कि दास को, भले ही वह निर्देश और शासन के माध्यम से, स्वामी के गुणों को साझा करके, लाभ होता है।
  - वह प्राकृतिक असमानता में विश्वास करते थे और कहते थे कि कुछ व्यक्ति शासन करने के लिए पैदा होते हैं और अन्य शासित होने के लिए।
  - दास श्रम द्वारा प्रदान किया गया अवकाश नागरिकों के लिए राजनीति और दर्शन में भाग लेने के लिए आवश्यक माना जाता था।
  - दास प्रथा यूनानी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में गहराई से अंतर्निहित थी, और अरस्तू ने इसके लिए दार्शनिक बचाव प्रस्तुत किया।
  - उन्होंने तर्क दिया कि यह स्वाभाविक है क्योंकि समाज में अलग-अलग लोग अलग-अलग कार्यों के लिए उपयुक्त होते हैं।
  - दासों का उपयोग केवल सत्ता या अत्यधिक धन अर्जित करने के लिए नहीं किया जाता था, बल्कि घर की जरूरतों के लिए भी किया जाता था।

परिवार का सिद्धांत:

- परिवार एक प्राकृतिक संस्था है और समाज की सबसे बुनियादी इकाई है, जो राज्य से भी पहले अस्तित्व में थी।

- यह प्रजनन और साहचर्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति से उत्पन्न होता है।

- **तीन प्राथमिक रिश्ते घर को परिभाषित करते हैं:**
  - पति-पत्नी (स्नेह और भूमिकाओं के स्वाभाविक विभेदन पर आधारित)।
  - माता-पिता-बच्चे (प्रजनन और देखभाल और शिक्षा की आवश्यकता के आधार पर)।
  - स्वामी-दास (जिसे वह स्वाभाविक और आवश्यक मानते थे, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है)।
- परिवार राज्य से डिग्री (आकार और जटिलता) और प्रकृति (उद्देश्य) दोनों में भिन्न होता है।
- राज्य एक अधिक जटिल संगठन है जिसमें अनेक परिवार और गांव शामिल हैं।
- परिवार मुख्यतः जीवन और अस्तित्व की बुनियादी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- दूसरी ओर, राज्य का उद्देश्य उच्च बौद्धिक और नैतिक आवश्यकताओं को पूरा करना तथा "अच्छा जीवन" सुनिश्चित करना है।
- उच्चतर संस्था के रूप में राज्य को सामान्य भलाई के लिए कुछ मामलों में परिवार को नियंत्रित और विनियमित करने का अधिकार है।
- परिवार में, अधिकार आमतौर पर सबसे बड़े पुरुष के पास होता है, जो अपनी पत्नी, बच्चों और दासों पर शासन करता है।

न्याय का सिद्धांत:

- न्याय राज्य का सार और नैतिक आधार है; किसी भी शासन व्यवस्था को टिके रहने और समृद्ध होने के लिए न्याय की सही योजना की आवश्यकता होती है।
- उन्होंने न्याय को "पूर्ण सद्गुण" और "कार्य में सद्गुण" माना, विशेष रूप से दूसरों के संबंध में।
- एक न्यायपूर्ण राज्य वह है जो स्वयं को आंतरिक कलह और विनाश से बचाता है।

न्याय के प्रकार:

- **सार्वभौमिक न्याय (या सामान्य न्याय):** इसमें व्यापक अर्थ में विधिपूर्णता और निष्पक्षता सम्मिलित है।
- इसका अर्थ है राज्य के कानूनों का पालन करना और सामान्यतः सभी सामाजिक व्यवहारों में एक सदाचारी व्यक्ति होना।

- **विशेष न्याय:** यह वस्तुओं के विशिष्ट वितरण और गलतियों के सुधार से संबंधित है। इसके दो उप-प्रकार हैं:
  - **वितरणात्मक न्याय:** इसका संबंध इस बात से है कि राज्य अपने नागरिकों के बीच वस्तुओं, धन, सम्मान और पदों का वितरण किस प्रकार करता है।
  - वितरण योग्यता या समुदाय की भलाई में योगदान के अनुसार होना चाहिए। इससे निष्पक्षता सुनिश्चित करके क्रांति को रोकने में मदद मिलती है।
  - अरस्तू ने लोकतांत्रिक मानदंड (योग्यता की परवाह किए बिना सभी के लिए समान हिस्सेदारी) और कुलीनतंत्रीय मानदंड (धन के आधार पर हिस्सेदारी) को अस्वीकार कर दिया।
  - वह एक कुलीन मानदंड के पक्षधर थे: गुण और नागरिक उत्कृष्टता के अनुसार वितरण।

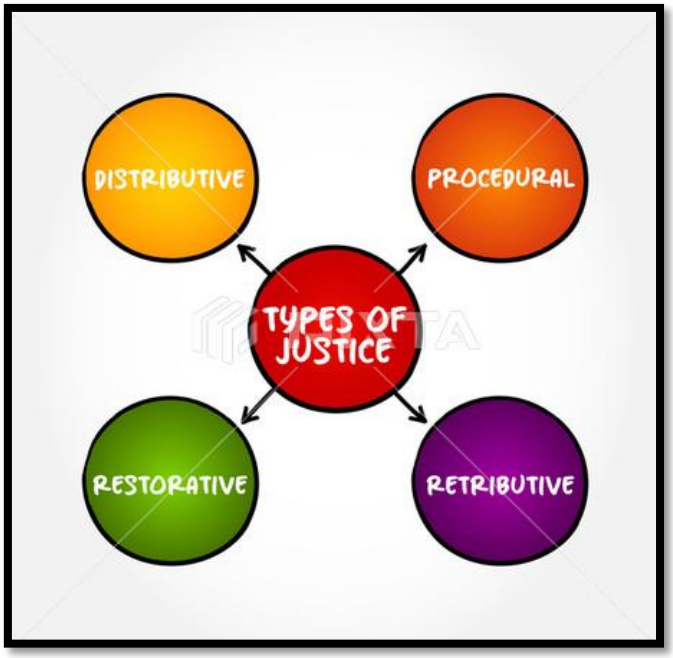

  - **उपचारात्मक/सुधारात्मक न्याय (या परिवर्तनीय न्याय):** इसका उद्देश्य संतुलन बिगड़ जाने पर उसे पुनः स्थापित करना है।
  - यह स्वैच्छिक लेनदेन (सिविल कानून, जैसे अनुबंध, बिक्री, ऋण) से संबंधित है, जो पक्षों के बीच निष्पक्षता सुनिश्चित करता है।
  - यह अनैच्छिक लेन-देन (आपराधिक कानून, जैसे चोरी, हमला) को भी संबोधित करता है, जिसका उद्देश्य दंड लगाकर होने वाले नुकसान को ठीक करना है।

अरस्तू के राजनीतिक विचार की आलोचना

1. गुलामी का औचित्य

- **आलोचना:** अरस्तू ने प्राकृतिक दासता को उचित ठहराया और कुछ लोगों को "स्वभाव से दास" कहा।
- **आलोचक विचारक:**
  - हेगेल - "प्राकृतिक दास" के विचार को खारिज कर दिया।

- आधुनिक मानवाधिकार सिद्धांतकार - इस दृष्टिकोण को अनैतिक और पुराना बताते हैं।

---

2. महिलाओं का बहिष्कार

- **आलोचना:** अरस्तू ने महिलाओं को नागरिकता और राजनीतिक भागीदारी से बाहर रखा।
- **आलोचक विचारक:**
  - मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट - महिलाओं के अधिकारों की वकालत की और शास्त्रीय बहिष्कार की आलोचना की।
  - नारीवादी विचारक (जैसे, सुसान मोलर ओकिन) - अरस्तू के लिंग पूर्वाग्रह को चुनौती दी।

---

3. लोकतंत्र विरोधी पूर्वाग्रह

- **आलोचना:** अरस्तू लोकतंत्र के प्रति संशयी थे तथा इसे शासन का एक विकृत रूप मानते थे।
- **आलोचक विचारक:**
  - जॉन स्टुअर्ट मिल - उदार लोकतंत्र और प्रतिनिधि सरकार का बचाव किया।
  - आधुनिक लोकतंत्रवादी - अरस्तू के सीमित दृष्टिकोण के विपरीत, समान राजनीतिक भागीदारी को महत्व देते हैं।

---

4. राजनीति का स्थिर और अभिजात्यवादी दृष्टिकोण

- **आलोचना:** उनका आदर्श राज्य कुछ लोगों (कुलीन वर्ग) के शासन को तरजीह देता था और उसमें परिवर्तन के लिए तंत्र का अभाव था।
- **आलोचक विचारक:**
  - कार्ल मार्क्स - वर्ग पदानुक्रम को कायम रखने के लिए प्राचीन दार्शनिकों की आलोचना की।
  - आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतकार - बहुलवाद और समावेशी भागीदारी पर जोर देते हैं।

---

5. दूरदर्शी (लक्ष्य-उन्मुख) विश्वदृष्टि

- **आलोचना:** अरस्तू का मानना था कि हर चीज का एक निश्चित उद्देश्य (टेलोस) होता है, जिसे आधुनिक विज्ञान और राजनीति अक्सर अस्वीकार करते हैं।
- **आलोचक विचारक:**
  - अनुभववादी एवं तर्कवादी – आध्यात्मिक मान्यताओं पर प्रश्न उठाएं।
  - आधुनिक वैज्ञानिक - वस्तुनिष्ठ, प्रयोगात्मक दृष्टिकोण को प्राथमिकता देते हैं।

6. पुराना शहर-राज्य (पोलिस) मॉडल

- **आलोचना:** उनका सिद्धांत छोटे ग्रीक शहर-राज्यों पर आधारित है, जो आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के लिए उपयुक्त नहीं है।
- **आलोचक विचारक:**
  - थॉमस हॉब्स - बड़े राज्यों के लिए एक केंद्रीकृत संप्रभुता का विचार पेश किया।
  - आधुनिक राजनीतिक वैज्ञानिकों को जटिल समाजों के लिए उपयुक्त ढांचे की आवश्यकता है।

जॉन रॉल्स (1921–2002)

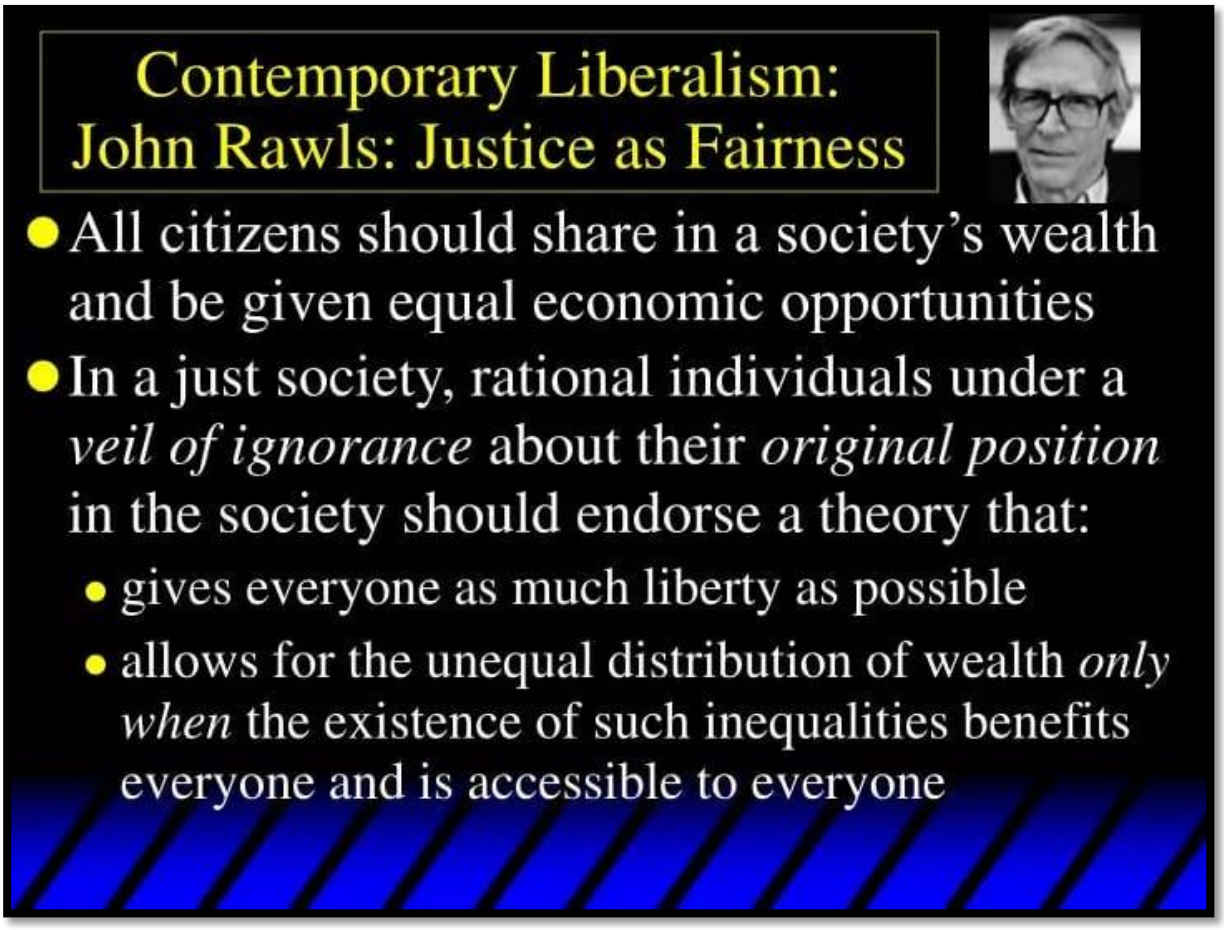

परिचय:

- एक अमेरिकी राजनीतिक और नैतिक दार्शनिक, जिन्हें व्यापक रूप से 20वीं सदी का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक दार्शनिक माना जाता है।
- उनके कार्य ने एंग्लो-अमेरिकन शिक्षा जगत में आदर्श राजनीतिक दर्शन को पुनर्जीवित किया।
- उन्हें उनकी महान कृति, *ए थ्योरी ऑफ जस्टिस* (1971) के लिए जाना जाता है, जिसमें उन्होंने समतावादी उदारवाद के एक संस्करण का बचाव किया है, जिसे उन्होंने "निष्पक्षता के रूप में न्याय" कहा है।
- इस कार्य ने उपयोगितावाद और अंतर्ज्ञानवाद के लिए एक सम्मोहक विकल्प प्रस्तुत किया।
- उन्होंने प्रिंसटन विश्वविद्यालय, कॉर्नेल विश्वविद्यालय, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित प्रोफेसर के पद पर कार्य किया।

- **मुख्य उद्धरण:** "प्रत्येक व्यक्ति में न्याय पर आधारित एक ऐसी अखंडता होती है जिसे समग्र रूप से समाज का कल्याण भी प्रभावित नहीं कर सकता।"
  - यह उनके उपयोगितावाद-विरोधी रुख और व्यक्तिगत अधिकारों की प्रधानता को सशक्त ढंग से व्यक्त करता है।

- **प्रमुख पुस्तकें:** *न्याय का सिद्धांत, राजनीतिक उदारवाद, लोगों का कानून , निष्पक्षता के रूप में न्याय: एक पुनर्कथन, नैतिक दर्शन के इतिहास पर व्याख्यान।*

वर्ग	विवरण
जन्म - मृत्यु	1921–2002
राष्ट्रीयता	अमेरिकी
के लिए जाना जाता है	*न्याय का सिद्धांत* , निष्पक्षता के रूप में न्याय
प्रमुख पुस्तकें	*न्याय का सिद्धांत, राजनीतिक उदारवाद, लोगों का कानून, निष्पक्षता के रूप में न्याय: एक पुनर्कथन*
प्रमुख संबद्धताएँ	प्रिंसटन विश्वविद्यालय, कॉर्नेल विश्वविद्यालय, एमआईटी, हार्वर्ड विश्वविद्यालय
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	मूल स्थिति, अज्ञानता का पर्दा, समान बुनियादी स्वतंत्रताएं, अंतर सिद्धांत, अवसर की निष्पक्ष समानता, ओवरलैपिंग सर्वसम्मति, सार्वजनिक कारण,

	चिंतनशील संतुलन

जॉन रॉल्स की प्रमुख पुस्तकें

जॉन रॉल्स (1921–2002)

---

1. न्याय का सिद्धांत

- **प्रकाशित:** 1971 (संशोधित संस्करण 1999)
- **मुख्य विषय:**
  - "निष्पक्षता के रूप में न्याय" की अवधारणा प्रस्तुत करता है।
  - न्याय के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए काल्पनिक विचार प्रयोगों के रूप में "मूल स्थिति" और "अज्ञानता के पर्दे" का परिचय दिया गया है।[1]
  - न्याय के दो सिद्धांतों के पक्ष में तर्क:[2]
    1. स्वतंत्रता सिद्धांत: प्रत्येक व्यक्ति को समान बुनियादी स्वतंत्रता की सबसे व्यापक योजना का समान अधिकार होना चाहिए, जो दूसरों के लिए स्वतंत्रता की समान योजना के साथ संगत हो।
    2. अंतर सिद्धांत: सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वे (क) सबसे कम सुविधा प्राप्त व्यक्ति के लिए अधिकतम लाभप्रद हों, जो न्यायोचित बचत सिद्धांत के अनुरूप हों, और (ख) अवसर की निष्पक्ष समानता की शर्तों के तहत सभी के लिए खुले पदों और पदों से जुड़ी हों।
  - राजनीतिक दर्शन को पुनर्जीवित किया और उदारवाद के लिए एक नया आधार स्थापित किया।

---

2. राजनीतिक उदारवाद

- **प्रकाशित:** 1993[8]

- **मुख्य विषय:**
  - यह इस प्रश्न का उत्तर है कि स्वतंत्र और समान नागरिकों वाला एक स्थिर और न्यायपूर्ण समाज किस प्रकार सद्भाव में रह सकता है, जबकि यह समाज उचित लेकिन असंगत धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक सिद्धांतों के बीच गहराई से विभाजित है।
  - यह "अतिव्यापी सर्वसम्मति" के विचार को प्रस्तुत करता है, जहां विविध व्यापक सिद्धांतों वाले नागरिक समाज की मूल संरचना के लिए न्याय की राजनीतिक अवधारणा पर सहमत हो सकते हैं।
  - "सार्वजनिक कारण" की अवधारणा को विकसित किया गया है, जो उन कारणों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो नागरिक मौलिक राजनीतिक प्रश्नों पर चर्चा करते समय एक दूसरे को दे सकते हैं।
  - युक्तिसंगत बहुलवाद की समस्या को संबोधित करने के लिए *न्याय के सिद्धांत* के कुछ पहलुओं को संशोधित और स्पष्ट किया गया है।

---

3. लोगों का कानून

- **प्रकाशित:** 1999
- **मुख्य विषय:**
  - सामाजिक अनुबंध के विचार को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक विस्तारित करते हुए "लोगों के कानून" की रूपरेखा तैयार की गई है जो उदार और "सभ्य" गैर-उदारवादी समाजों के बीच संबंधों को नियंत्रित कर सकता है।
  - उदार समाजों के लिए विदेश नीति के सिद्धांतों का प्रस्ताव, जिसमें "बोझग्रस्त समाजों" को सहायता प्रदान करने के कर्तव्य और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान शामिल है।
  - एक "यथार्थवादी स्वप्नलोक" के विचार पर चर्चा की गई , एक ऐसा विश्व जहां न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संबंध संभव हों। 13
  - न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत और अंतर्राष्ट्रीय न्याय जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई।

---

4. निष्पक्षता के रूप में न्याय: एक पुनर्कथन

- **प्रकाशित:** 2001 (एरिन केली द्वारा संपादित, रॉल्स के व्याख्यानों पर आधारित)
- **मुख्य विषय:**
  - *न्याय के सिद्धांत* के मुख्य तर्कों का एक संक्षिप्त और अधिक सुलभ अवलोकन और स्पष्टीकरण प्रदान करता है ।
  - अपने पहले के कार्यों की कई आलोचनाओं और गलतफहमियों का जवाब दिया।
  - न्याय के दो सिद्धांतों को परिष्कृत करता है और सहयोग की एक निष्पक्ष प्रणाली के रूप में समाज के विचार को और अधिक विस्तृत करता है।
  - न्यायपूर्ण समाज की स्थिरता के संबंध में *राजनीतिक उदारवाद* के विचारों को एकीकृत करता है ।

सिद्धांत (1971):

- **उद्देश्य:** न्याय के सिद्धांतों का एक समूह विकसित करना जो उपयोगितावाद का बेहतर विकल्प प्रदान करेगा।
- उन्होंने तर्क दिया कि उपयोगितावाद, समग्र भलाई के लिए अल्पसंख्यकों के अधिकारों और कल्याण का त्याग करने को उचित ठहरा सकता है।
- **विधि:** रॉल्स ने लॉक, रूसो और कांट की सामाजिक अनुबंध परंपरा को पुनर्जीवित किया, लेकिन एक पूर्णतः काल्पनिक परिदृश्य का प्रयोग किया।
- वह पूछते हैं कि निष्पक्षता की प्रारंभिक स्थिति में स्वतंत्र और तर्कसंगत व्यक्ति किन सिद्धांतों से सहमत होंगे।
- **मूल स्थिति:** यह एक काल्पनिक विचार प्रयोग है, जिसमें प्रतिभागियों के बीच पूर्ण समानता की स्थिति है।
- यहां, स्वतंत्र और तर्कसंगत व्यक्तियों को अपने समाज के लिए सरकार और सामाजिक संरचना के बुनियादी सिद्धांतों को चुनने का काम सौंपा जाता है।
- **अज्ञानता का पर्दा:** मूल स्थिति की एक महत्वपूर्ण विशेषता; व्यक्तियों को उनकी स्वयं की विशेष विशेषताओं के प्रति अज्ञानी बना दिया जाता है।
- वे अपनी सामाजिक या आर्थिक स्थिति, जाति, लिंग, धर्म, प्राकृतिक प्रतिभा या अच्छे जीवन की अपनी व्यक्तिगत अवधारणा के बारे में नहीं जानते।
- इससे निष्पक्षता सुनिश्चित होती है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने विशिष्ट परिस्थितियों या समूह को अनुचित लाभ पहुंचाने के लिए सिद्धांतों को नहीं बदल सकता।

- **मूल स्थिति में चुने गए सिद्धांत (शब्दावली क्रम में):**
  1. **समान बुनियादी स्वतंत्रता सिद्धांत (प्रथम सिद्धांत):**
     - प्रत्येक व्यक्ति को समान बुनियादी स्वतंत्रताओं की सबसे व्यापक समग्र प्रणाली पर समान अधिकार होना चाहिए जो सभी के लिए स्वतंत्रता की समान प्रणाली के साथ संगत हो।
     - इसमें राजनीतिक स्वतंत्रताएं (मतदान का अधिकार, पद धारण करने का अधिकार), विचार, विवेक, भाषण, सभा की स्वतंत्रता तथा कानून के शासन और व्यक्तिगत संपत्ति से जुड़े अधिकार शामिल हैं।
     - यह स्पष्ट रूप से कुछ आर्थिक स्वतंत्रताओं को बाहर करता है, जैसे उत्पादन के साधनों पर अप्रतिबंधित स्वामित्व का अधिकार या अनुबंध की असीमित स्वतंत्रता।
     - इन बुनियादी स्वतंत्रताओं को अनुल्लंघनीय माना जाता है तथा सामाजिक या आर्थिक लाभ के लिए इनका व्यापार नहीं किया जा सकता।
  2. **सामाजिक और आर्थिक असमानता सिद्धांत (** दूसरा सिद्धांत):
     - सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वे दोनों हों:
       - (क) अंतर सिद्धांत: समाज के सबसे कम सुविधा प्राप्त सदस्यों को अधिकतम लाभ पहुंचाना।
       - कुछ असमानता स्वीकार्य हो सकती है, यदि इससे सबसे कमजोर समूह की संभावनाओं में सुधार हो (उदाहरण के लिए, ऐसे प्रोत्साहन प्रदान करके जो समग्र उत्पादकता को बढ़ाए और सभी को, विशेष रूप से गरीबों को लाभ पहुंचाए)।
       - **(ख) अवसर की निष्पक्ष समानता:** अवसर की निष्पक्ष समानता की शर्तों के तहत सभी के लिए खुले कार्यालयों और पदों से संबद्ध।
       - इसके लिए औपचारिक गैर-भेदभाव से कहीं अधिक की आवश्यकता है; इसके लिए यह आवश्यक है कि समाज सभी को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे बुनियादी साधन उपलब्ध कराए, ताकि इन पदों के लिए प्रतिस्पर्धा करने का निष्पक्ष अवसर मिल सके।

राजनीतिक प्रणालियों पर प्रभाव:

- **सोवियत शैली के साम्यवाद (राज्य समाजवाद) को अस्वीकार करता है: यह** समान बुनियादी स्वतंत्रता और अवसर की निष्पक्ष समानता के प्रथम सिद्धांत के साथ असंगत है।

- इसमें आमतौर पर राजनीतिक स्वतंत्रता का दमन शामिल होता है और यह वास्तविक निष्पक्ष अवसर प्रदान नहीं करता है।

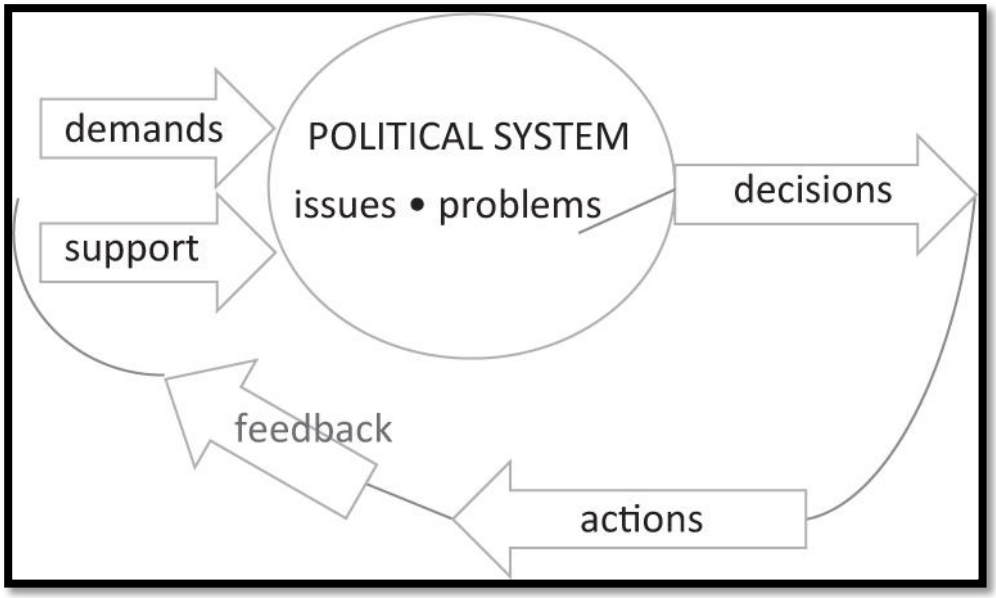

- **लेसेज-फेयर पूंजीवाद को अस्वीकार करता है:** धन और शक्ति के अन्यायपूर्ण वितरण की ओर ले जाता है, जो अंतर सिद्धांत का उल्लंघन करता है।
- यह अवसर की निष्पक्ष समानता सुनिश्चित करने में भी विफल रहता है, क्योंकि यह निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा के कुछ साधनों से वंचित करता है।
- **"संपत्ति-स्वामित्व लोकतंत्र" का समर्थन करता है:** एक ऐसी प्रणाली जिसमें उत्पादन के साधनों और मानव पूंजी का व्यापक वितरण होता है।
- इसका उद्देश्य सबसे कमजोर वर्ग के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और सभ्य जीवन स्तर सुनिश्चित करना है, ताकि सभी लोग समाज के पूर्ण सहयोगात्मक सदस्य बन सकें।
- वैकल्पिक रूप से, उनका सुझाव है कि बाजार-उन्मुख उदार समाजवाद का एक रूप भी उनके सिद्धांतों को संतुष्ट कर सकता है।
- उनका सिद्धांत समतावादी उदारवाद और आधुनिक कल्याणकारी राज्य के लिए एक मजबूत दार्शनिक आधार प्रदान करता है, तथा स्वतंत्रता और समानता दोनों पर जोर देता है।

राजनीतिक उदारवाद (1993):

- **संशोधन/परिष्करण:** रॉल्स ने न्याय के दो सिद्धांतों के लिए अपने तर्क को तर्कसंगत बहुलवाद की वास्तविकता के प्रकाश में पुनः प्रस्तुत किया।

- इस संशोधित ढांचे में अनुबंधित व्यक्तियों को ऐसे नागरिकों का प्रतिनिधित्व करते हुए देखा गया है जो परस्पर विरोधी लेकिन "उचित व्यापक सिद्धांत" (विश्वदृष्टिकोण, धर्म, नैतिक दर्शन) रखते हैं।
- **अतिव्यापी सहमति:** न्याय के सिद्धांत वे होने चाहिए जिन पर विभिन्न उचित व्यापक सिद्धांतों वाले लोग राजनीतिक उद्देश्यों के लिए सहमत हो सकें।
- यह आम सहमति "अतिव्यापी" है, क्योंकि प्रत्येक समूह अपने व्यापक सिद्धांत के भीतर से राजनीतिक अवधारणा की पुष्टि कर सकता है, इसके लिए किसी गहन दार्शनिक या धार्मिक आधार पर सहमत होने की आवश्यकता नहीं होती।
- इसका उद्देश्य एक न्यायपूर्ण समाज के लिए स्थिरता और वैधता सुनिश्चित करना है, जिसमें अंतिम मूल्यों पर गहरे, अघुलनशील मतभेद हों।
- **सार्वजनिक तर्क:** मौलिक मामलों पर राजनीतिक निर्णयों का औचित्य ऐसे तर्कों और मूल्यों पर आधारित होना चाहिए जो सभी नागरिकों के लिए सुलभ और स्वीकार्य हों।
- यह उन विशिष्ट व्यापक सिद्धांतों से प्राप्त कारणों पर निर्भर होने से बचता है, जिनसे अन्य लोग सहमत नहीं हो सकते हैं, इस प्रकार यह आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों की बहुलता का सम्मान करता है।

जॉन रॉल्स के सिद्धांत की आलोचना (विचारक-वार)

1. माइकल सैंडेल - कम्यूनिटेरियन क्रिटिक

- तर्क दिया कि रॉल्स का "मुक्त आत्म" का विचार अवास्तविक है।
- व्यक्तियों को उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान से अलग नहीं किया जा सकता।
- रॉल्स की "मूल स्थिति" को अत्यधिक अमूर्त और वास्तविक नैतिक अनुभव से अलग बताकर खारिज कर दिया।

---

2. चार्ल्स टेलर - सांस्कृतिक पहचान का महत्व

- रॉल्स का दावा है कि वे व्यक्तिगत पहचान को आकार देने में सांस्कृतिक मान्यता की गहरी भूमिका को नजरअंदाज करते हैं।
- न्याय तटस्थ नहीं हो सकता; उसे समूह संबद्धता के महत्व को पहचानना होगा।
- व्यक्ति को स्वायत्त और आत्मनिर्भर मानने के उदारवादी दृष्टिकोण को चुनौती देता है।

3. भीखू पारेख – बहुसंस्कृतिवादी आलोचना

- रॉल्स का सिद्धांत पश्चिमी उदारवादी व्यक्तिवाद पर आधारित है।
- गैर-पश्चिमी मूल्यों और समूह अधिकारों (जैसे, धार्मिक या जातीय अल्पसंख्यक) को ध्यान में रखने में विफल रहता है।
- न्याय में सांस्कृतिक विविधता और समूह-विशिष्ट अधिकार शामिल होने चाहिए।

4. आइरिस मैरियन यंग - संरचनात्मक असमानता आलोचना

- संरचनात्मक उत्पीड़न (जैसे, जाति, लिंग) के प्रति अंधे होने के लिए रॉल्स की आलोचना की गई।
- रॉल्स कहते हैं कि वे असमानता को एक वितरण समस्या के रूप में देखते हैं तथा शक्ति संबंधों और सामाजिक प्रक्रियाओं को नजरअंदाज करते हैं।
- विशुद्धतः सार्वभौमिक नीतियों के स्थान पर समूह-विभेदित नीतियों की वकालत करना।

5. जीए कोहेन – मार्क्सवादी आलोचना

- दावा है कि रॉल्स का अंतर सिद्धांत अभी भी असमानता और पूंजीवादी संरचनाओं को सहन करता है।
- रॉल्स का तर्क है कि आर्थिक समानता सुनिश्चित करने के लिए वे पर्याप्त कदम नहीं उठाते।
- उनका मानना है कि न्याय के लिए गहरे वर्गीय विभाजन को समाप्त करना आवश्यक है, न कि केवल सबसे कमजोर वर्ग की स्थिति में सुधार करना।

6. अलास्डेयर मैकइंटायर - नैतिक आलोचना

- उनका मानना है कि रॉल्स के नैतिक ढांचे में ऐतिहासिक और नैतिक गहराई का अभाव है।
- मैकइंटायर के विचार में , न्याय को परंपरा और सद्गुण से जोड़ा जाना चाहिए, न कि अमूर्त प्रक्रियाओं से।
- नैतिकता को साझा आख्यानों और सांस्कृतिक प्रथाओं से अलग करने के लिए रॉल्स की आलोचना की गई।

7. सुसान मोलर ओकिन – नारीवादी आलोचना

- रॉल्स का तर्क है कि वे निजी क्षेत्र (परिवार, विवाह) में लैंगिक असमानताओं की उपेक्षा करते हैं।
- उनका मॉडल एक न्यायपूर्ण पारिवारिक संरचना को मानता है, जो लैंगिक उत्पीड़न को छुपाता है।
- नारीवादी न्याय में निजी/घरेलू क्षेत्र भी शामिल होना चाहिए, न कि केवल सार्वजनिक संस्थान।

हन्ना अरेंड्ट (1906–1975)

परिचय:

- जर्मनी में जन्मी अमेरिकी राजनीतिक सिद्धांतकार, वह 20वीं सदी की सबसे प्रभावशाली और मौलिक राजनीतिक विचारकों में से एक बन गईं।
- यहूदी विरासत की, वह नाजी जर्मनी से भाग निकली और बाद में फ्रांस पर कब्जा कर लिया, अंततः संयुक्त राज्य अमेरिका में शरण ली।
- उन्होंने 'दार्शनिक' लेबल को अस्वीकार कर दिया, तथा तर्क दिया कि दर्शनशास्त्र "एकवचन में मनुष्य" से संबंधित है।
- वह 'राजनीतिक सिद्धांतकार' को प्राथमिकता देती थीं, क्योंकि उनका ध्यान "पृथ्वी पर रहने वाले पुरुषों" और बहुवचन में परस्पर व्यवहार करने पर था।

- उनका व्यापक कार्य सत्ता, राजनीति, प्रत्यक्ष लोकतंत्र, अधिकार और अधिनायकवाद की नवीन परिघटना की प्रकृति पर केंद्रित है।
- वह मार्टिन हाइडेगर, कार्ल जैस्पर्स, अरस्तू, ऑगस्टीन और इमैनुअल कांट जैसे विचारकों से अत्यधिक प्रभावित थीं।
- **मुख्य उद्धरण:** "सत्ता कभी भी किसी व्यक्ति की संपत्ति नहीं होती; यह एक समूह की होती है और तभी तक अस्तित्व में रहती है जब तक समूह एकजुट रहता है।"
- यह शक्ति को एक संबंधपरक और सामूहिक क्षमता के रूप में समझने की उनकी विशिष्ट समझ को दर्शाता है।

वर्ग	विवरण
जन्म - मृत्यु	1906–1975
राष्ट्रीयता	जर्मन मूल के अमेरिकी
के लिए जाना जाता है	अधिनायकवाद, शक्ति, सार्वजनिक क्षेत्र, वीटा एक्टिवा , बुराई की सामान्यता पर सिद्धांत
प्रमुख पुस्तकें	*अधिनायकवाद की उत्पत्ति, मानवीय स्थिति, येरुशलम में आइकमन, क्रांति पर, मन का जीवन*
से प्रभावित	मार्टिन हाइडेगर, कार्ल जैस्पर्स, अरस्तू, ऑगस्टीन, इमैनुअल कांट
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	वीटा एक्टिवा (श्रम , कार्य, क्रिया), सार्वजनिक/निजी क्षेत्र, शक्ति, हिंसा, अधिनायकवाद, बुराई की तुच्छता, जन्मता , बहुलता, क्रांति

प्रमुख पुस्तकें

अधिनायकवाद की उत्पत्ति, मानवीय स्थिति, जेरूसलम में इचमन: बुराई की तुच्छता पर एक रिपोर्ट, क्रांति पर, मन का जीवन।

---

1. अधिनायकवाद की उत्पत्ति

- **प्रकाशित:** 1951 (बाद के संस्करणों में नई प्रस्तावनाएँ और अनुभाग शामिल किए गए) [1]
- **मुख्य विषय:**
  - नाजी जर्मनी और स्टालिनवादी रूस की ऐतिहासिक जड़ों और आम तत्वों का विश्लेषण करता है, क्योंकि ये सरकार के नए रूप हैं जो पारंपरिक अत्याचारों या तानाशाही से मौलिक रूप से भिन्न हैं। [2]
  - यहूदी-विरोध , साम्राज्यवाद (विशेष रूप से विदेशी विस्तार और नस्लवाद) और राष्ट्र-राज्य के विघटन के संयोजन से उत्पन्न होता है ।
  - यह पुस्तक इस बात का अन्वेषण करती है कि किस प्रकार विचारधाराओं (जैसे नस्लवाद या ऐतिहासिक नियतिवाद) और आतंक का उपयोग जनता को संगठित करने, मानव बहुलता को नष्ट करने और पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए उपकरण के रूप में किया जाता है।
  - गुप्त पुलिस की केन्द्रीय भूमिका, सम्पूर्ण प्रभुत्व के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में एकाग्रता शिविरों का उपयोग, तथा जीवन के सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों का विनाश जैसी प्रमुख विशेषताओं की पहचान की गई है। [3]
  - बाद के विचारों में, विशेष रूप से आइचमैन के संबंध में, "बुराई की सामान्यता" की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें सुझाव दिया गया है कि महान बुराइयां साधारण लोगों द्वारा भी की जा सकती हैं जो केवल आदेशों का पालन करते हैं और जिनमें आलोचनात्मक विचार का अभाव होता है। [4]

---

2. मानवीय स्थिति

- **प्रकाशित:** 1958 [5]
- **मुख्य विषय:**
  - मानव गतिविधि की मूलभूत श्रेणियों का अन्वेषण करता है, श्रम, कार्य और क्रिया (*विटा एक्टिवा* या सक्रिय जीवन) के बीच अंतर करता है। [6]
  - श्रम: जीवन के निर्वाह के लिए आवश्यक गतिविधियाँ, चक्रीय और कभी न ख़त्म होने वाली (जैसे, खेती, सफ़ाई)। [7]जैविक मानव के अनुरूप।
  - **कार्य:** टिकाऊ वस्तुओं को बनाने की गतिविधि जो मानव कलाकृति या दुनिया बनाती है (जैसे, उपकरण, कला, इमारतें)। [8] एक निर्माता के रूप में मानव से मेल खाता है (*होमो फैबर*)।

- **क्रिया:** किसी नई चीज को शुरू करने, दूसरों की मौजूदगी में अपने भाषण और कर्म से खुद को प्रकट करने और एक साझा सार्वजनिक क्षेत्र बनाने की अद्वितीय मानवीय क्षमता। यह राजनीति और स्वतंत्रता का क्षेत्र है।
- तर्क दिया गया है कि आधुनिकता ने श्रम और कार्य को क्रिया से अधिक महत्व दिया है, जिसके कारण सार्वजनिक क्षेत्र और वास्तविक राजनीतिक जीवन की संभावना में गिरावट आई है। [9]
- जन्मता (नए सिरे से शुरुआत करने की क्षमता) और सार्वजनिक क्षेत्र के महत्व पर जोर दिया गया है ।

---

3. येरुशलम में आइकमन: बुराई की तुच्छता पर एक रिपोर्ट

- **प्रकाशित:** 1963
- **मुख्य विषय:**
  - एडोल्फ इचमैन के मुकदमे पर एक रिपोर्ट, जो होलोकॉस्ट की रसद व्यवस्था के आयोजन के लिए जिम्मेदार एक नाजी एसएस अधिकारी था। [11]
  - "बुराई की तुच्छता" की विवादास्पद अवधारणा को प्रस्तुत और विकसित करता है। अरेंड्ट ने तर्क दिया कि आइकमन एक राक्षसी विचारक नहीं था, बल्कि एक साधारण, विचारहीन नौकरशाह था, जो गहरी यहूदी विरोधी घृणा से अधिक अपने कैरियर में उन्नति और आदेशों का पालन करने के कर्तव्य की भावना से प्रेरित था।
  - यह सुझाव देता है कि आइकमन की बुराई "सामान्य" थी, क्योंकि यह शैतानी या परपीड़क प्रकृति के बजाय विचार की कमी, सहानुभूति की अक्षमता और नैतिक निर्णय लेने में विफलता से उपजी थी।
  - यह पुस्तक व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, प्राधिकार के प्रति आज्ञाकारिता, आधुनिक नौकरशाही प्रणालियों में बुराई की प्रकृति तथा स्वतंत्र सोच और नैतिक निर्णय के महत्व के बारे में गंभीर प्रश्न उठाती है।
  - इस कृति ने इचमैन के चित्रण तथा होलोकॉस्ट के दौरान कुछ यहूदी नेताओं की आलोचना के कारण काफी विवाद उत्पन्न किया था।

---

4. क्रांति पर

- **प्रकाशित:** 1963
- **मुख्य विषय:**

- अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों का तुलनात्मक अध्ययन, उनके उद्गम, उद्देश्य और परिणामों की जांच।
- तर्क देते हैं कि अमेरिकी क्रांति स्थायी राजनीतिक स्वतंत्रता स्थापित करने में अधिक सफल रही क्योंकि इसमें स्वतंत्रता के गठन और स्वशासन की नई संस्थाओं के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया [112]
- इसकी तुलना फ्रांसीसी क्रांति से करें, जिसके बारे में अरेंड्ट का तर्क है कि यह "सामाजिक प्रश्न" (गरीबी और असमानता) के कारण पटरी से उतर गई, जिससे आतंक पैदा हुआ और अंततः स्थिर स्वतंत्रता स्थापित करने में असफल रही।
- मुक्ति (उत्पीड़न से मुक्ति) और स्वतंत्रता (सार्वजनिक जीवन और स्वशासन में सक्रिय भागीदारी) के बीच अंतर पर जोर दिया गया है।
- नए राजनीतिक निकायों की स्थापना के महत्व और राजनीतिक कार्रवाई में पाई जाने वाली "सार्वजनिक खुशी" की भावना पर प्रकाश डाला गया।

---

5. मन का जीवन

- **प्रकाशन:** 1978 (मरणोपरांत, दो खंडों में: "थिंकिंग" और "विलिंग"; "जजिंग" पर तीसरे खंड की योजना बनाई गई थी, लेकिन वह पूरा नहीं हुआ)
- **मुख्य विषय:**
  - *विटा कंटेम्पलटिवा)* की गतिविधियों की एक दार्शनिक जांच , जिसका उद्देश्य *द ह्यूमन कंडीशन के विटा एक्टिवा* पर ध्यान केंद्रित करना है ।
  - **खंड 1 (सोचना):** सोचने की प्रकृति को एक अलग मानसिक गतिविधि के रूप में खोजता है, जो ज्ञान या अनुभूति से अलग है। [113] सोचने में दिखावे की दुनिया से अलग हटना और खुद से मौन संवाद करना शामिल है। [114] यह अर्थ-निर्माण और निर्णय के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन यह सीधे व्यावहारिक परिणाम नहीं देता है।
  - **खंड 2 (इच्छाशक्ति):** इच्छाशक्ति की क्षमता, इसकी ऐतिहासिक खोज, तथा स्वतंत्रता, आवश्यकता और क्रिया से इसके संबंध की जांच करता है। अरेंड्ट स्वतंत्र इच्छा से जुड़ी दार्शनिक समस्याओं से जूझते हैं।
  - अलिखित तीसरे खंड का उद्देश्य "निर्णय" पर ध्यान केन्द्रित करना था, जिसे अरेंड्ट ने एक महत्वपूर्ण राजनीतिक क्षमता के रूप में देखा था, जो कि कांट के सौंदर्य निर्णय से प्रेरणा लेते हुए, सामान्य नियमों के अंतर्गत आए बिना भेद करने और विवरणों का मूल्यांकन करने की क्षमता से संबंधित था।

कार्यप्रणाली:

- अरेंड्ट ने राजनीतिक चिंतन के लिए एक परिघटनाशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाया, जो राजनीतिक जीवन के जीवंत अनुभव पर केंद्रित था।
- उन्होंने केवल अमूर्त परिभाषाओं या विशुद्ध अनुभवजन्य आंकड़ों पर निर्भर रहने के बजाय, यह विश्लेषण करके राजनीतिक अवधारणाओं को समझने का प्रयास किया कि वे मानवीय क्रियाकलापों और भाषण में किस प्रकार प्रकट होती हैं।
- उनका उद्देश्य राजनीतिक अस्तित्व और साझा मानवीय अनुभव की मौलिक संरचनाओं और अर्थों को उजागर करना था।
- उन्होंने पारंपरिक राजनीतिक दर्शन की आलोचना करते हुए कहा कि इसमें अक्सर ऐसी वैचारिक योजनाएं थोपी जाती हैं जो वास्तविक राजनीतिक अनुभवों को अस्पष्ट या विकृत कर देती हैं।
- दार्शनिक परंपरा की गलत व्याख्याओं और संचित अवसाद को दूर करने के लिए हाइडेगर के " डिस्ट्रक्शन " जैसी पद्धति का उपयोग किया ।

मानवीय स्थिति (वीटा एक्टिवा) :

- अरेंड्ट ने *विटा एक्टिवा* (सक्रिय जीवन) को *विटा कंटेम्पलाटिवा* (चिंतन का जीवन) से अलग किया है।
- वह उस पारंपरिक दार्शनिक पदानुक्रम को चुनौती देती हैं, जिसने ऐतिहासिक रूप से चिंतन को कर्म से ऊपर सर्वोच्च मानवीय प्रयास माना है।

तीन मौलिक मानवीय गतिविधियाँ मिलकर वीटा एक्टिवा का निर्माण करती हैं :

- **श्रम :** जैविक जीवन और अस्तित्व के लिए आवश्यक गतिविधियाँ, जो मानव शरीर की आवश्यकताओं के अनुरूप होती हैं (जैसे, भोजन उगाना, जन्म देना)।
- यह चक्रीय, दोहराव वाला है, और इसके उत्पाद जल्दी ही खाए जाते हैं। यह *एनिमल लेबरान* (श्रम करने वाला जानवर) से मेल खाता है। यहाँ कोई वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है, केवल आवश्यकता है।

- **कार्य:** ऐसी गतिविधियाँ जो प्राकृतिक वातावरण से अलग, वस्तुओं की एक कृत्रिम, टिकाऊ दुनिया का निर्माण करती हैं (जैसे, घर बनाना, उपकरण बनाना, कला)।
- *होमो फैबर* (निर्माता मनुष्य) का क्षेत्र है । यह विशुद्ध आवश्यकता से सापेक्ष स्वतंत्रता प्रदान करता है।
- **क्रिया:** ऐसी गतिविधियाँ जो वस्तुओं या पदार्थ की मध्यस्थता के बिना लोगों के बीच सीधे घटित होती हैं।
- यह मानव बहुलता से मेल खाता है, यह तथ्य कि मनुष्य अलग-अलग और अद्वितीय व्यक्तियों के रूप में एक साथ रहते हैं। यह राजनीति, भाषण, आत्म-प्रकटीकरण और नई चीजें शुरू करने की क्षमता (जन्मजात) का क्षेत्र है।
- *जीवन शक्ति* का सर्वोच्च रूप है तथा मानवीय स्वतंत्रता और विशिष्टता का सच्चा क्षेत्र है।

- **सार्वजनिक और निजी क्षेत्र:** अरेंड्ट ने प्राचीन यूनानी अनुभव से सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बीच एक स्पष्ट अंतर रेखांकित किया है।
- सार्वजनिक क्षेत्र (*पोलिस*) समान व्यक्तियों के बीच कार्य करने, बोलने और उपस्थित होने का स्थान था।
- निजी क्षेत्र (घरेलू या *ओइकोस*) श्रम , आवश्यकता और जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति का क्षेत्र था ।
- उनका तर्क है कि आधुनिकता ने इस अंतर को खतरनाक रूप से धुंधला कर दिया है, जिसके कारण "सामाजिक का उदय" हुआ है, जहां निजी आर्थिक चिंताएं सार्वजनिक क्षेत्र पर आक्रमण करती हैं और उस पर हावी हो जाती हैं।

राजनीति/कार्रवाई की अवधारणा:

- अरेंड्ट के लिए, राजनीति आंतरिक रूप से क्रिया और भाषण से जुड़ी हुई है, जो केवल सार्वजनिक क्षेत्र में ही हो सकती है।
- राजनीति मनुष्यों के एक साथ रहने और मिलकर कार्य करने की कला है।
- इसके लिए **बहुलता की आवश्यकता होती है:** मनुष्य एक दूसरे के स्थान पर आने वाले उपकरण नहीं हैं, बल्कि वे अलग-अलग व्यक्ति हैं जो अपनी विशिष्टता के कारण एक दूसरे के सामने आते हैं।
- राजनीति अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के बीच रहने की इस स्थिति से उत्पन्न होती है।
- क्रिया, विशेष रूप से भाषण के माध्यम से, यह प्रकट करती है कि व्यक्ति **"कौन"** है (किसी की विशिष्ट पहचान और व्यक्तित्व), न कि केवल यह कि वह **"क्या"** है (गुण , प्रतिभा या सामाजिक भूमिकाएं)।

- इसलिए, राजनीति का अर्थ समान लोगों के बीच प्रेरक भाषण और स्मरणीय कार्य के माध्यम से एक साझा विश्व का निर्माण करना और उसे बनाए रखना है।
- वह स्वस्थ राजनीति के मूल तत्व के रूप में सक्रिय नागरिक भागीदारी तथा निष्क्रियता और अधिनायकवाद के खतरों पर अंकुश लगाने के पक्ष में हैं।

शक्ति की अवधारणा:

- अरेंड्ट ने शक्ति, ताकत, बल और हिंसा के बीच महत्वपूर्ण अंतर स्पष्ट किया है, जिन्हें अक्सर एक साथ जोड़ दिया जाता है।
- **शक्ति:** एक व्यक्तिगत गुण है, जो किसी व्यक्ति या वस्तु में निहित होता है; यह एकवचन से संबंधित है।
- **बल:** अक्सर प्रकृति की शक्तियों या परिस्थितियों के बल से जुड़ा होता है; यह तात्विक है।

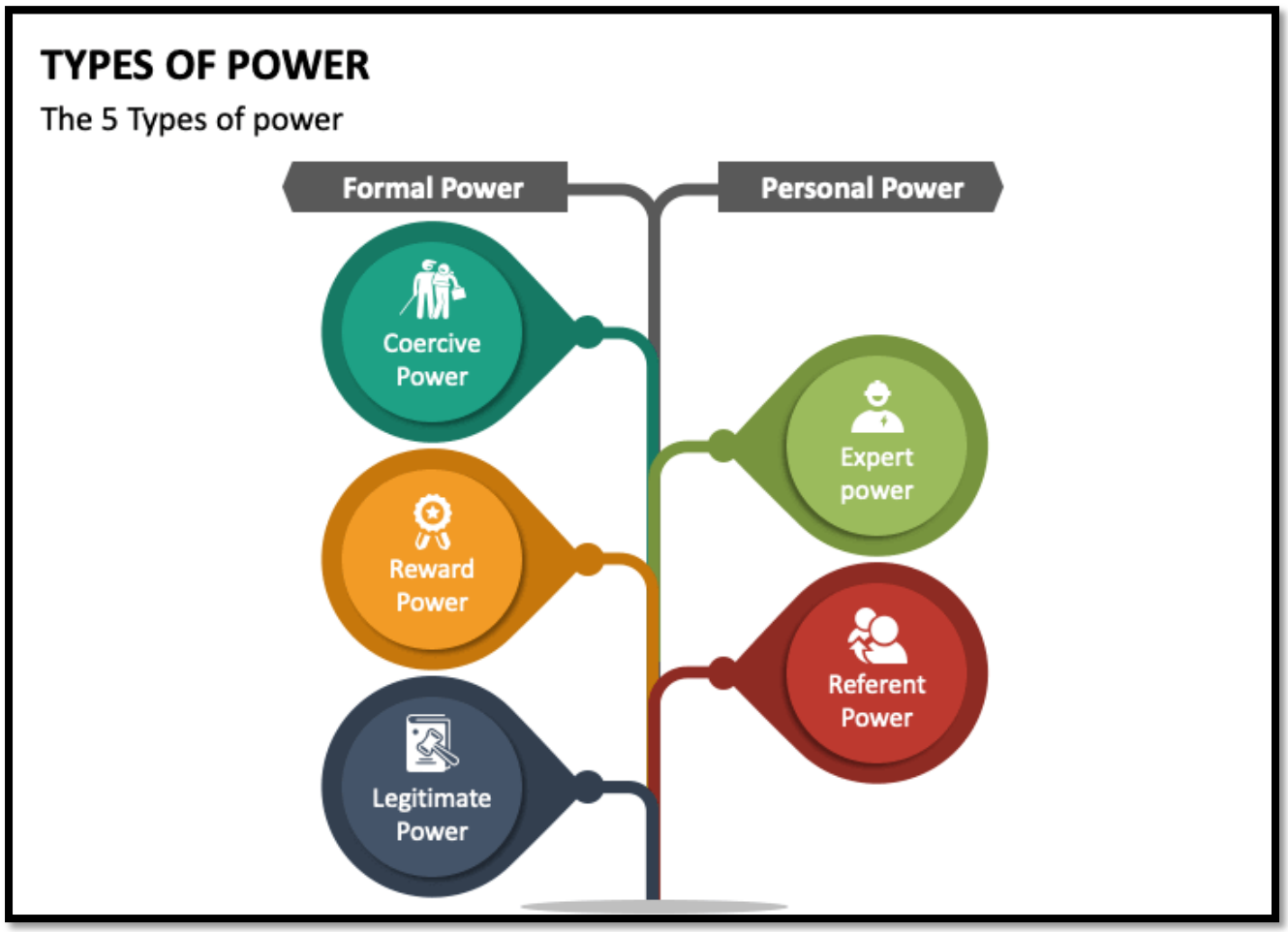

- **हिंसा:** इसमें साधनात्मक चरित्र होता है; यह प्राकृतिक शक्ति को बढ़ाने के लिए औजारों (औजारों, हथियारों) का उपयोग करता है।
- हिंसा राज्य के दबाव या आज्ञाकारिता के लिए प्रयोग किये जाने वाले अधिकार की विशेषता है; यह सत्ता को नष्ट कर सकती है।
- **शक्ति:** यह एक समूह द्वारा मिलकर कार्य करने से संबंधित होती है; यह एक सामान्य उद्देश्य के लिए एक साथ आने वाले लोगों से उत्पन्न होती है और जब वे बिखर जाते हैं तो लुप्त हो जाती है।
- सत्ता सहकारी होती है, बलपूर्वक नहीं, और यह सभी वैध सरकारों का आधार है। इसे व्यक्तियों द्वारा संग्रहित, संचित या धारण नहीं किया जा सकता, केवल समूहों द्वारा ही किया जा सकता है।
- सत्ता *अद्वितीय है*; यह वह है जो सार्वजनिक क्षेत्र को अस्तित्व में रखती है।

अधिनायकवाद (अधिनायकवाद की उत्पत्ति):

- अरेंड्ट ने नाजीवाद (जर्मनी) और स्टालिनवाद (सोवियत संघ) का विश्लेषण पूरी तरह से नए शासन-रूपों के रूप में किया, जो पूर्ववर्ती निरंकुश शासन-प्रणालियों से अलग थे।
- अधिनायकवाद मूल रूप से साधारण अत्याचार या तानाशाही से अलग है। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत जीवन के हर पहलू पर पूर्ण, स्थायी प्रभुत्व स्थापित करना है।
- यह अपने प्राथमिक साधन के रूप में समूची आबादी (न कि केवल राजनीतिक विरोधियों) के विरुद्ध संगठित आतंक का प्रयोग करता है।
- यह व्यवस्थित रूप से सार्वजनिक और निजी जीवन के बीच के अंतर को नष्ट कर देता है, तथा सभी को समान रूप से राज्य नियंत्रण के अधीन बना देता है।
- यह अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली विचारधारा (जैसे, जाति वर्चस्व, सर्वहारा वर्ग की ऐतिहासिक नियति) और निरंतर, गतिशील गति पर निर्भर करता है।
- उन्होंने इसकी जड़ें 19वीं सदी के यहूदी-विरोध (जिसने एक वैचारिक मॉडल प्रदान किया) और साम्राज्यवाद (जिसने विदेशी वर्चस्व के उपकरण के रूप में नस्लवाद और नौकरशाही को पेश किया) में देखीं।
- अधिनायकवाद सामाजिक बंधनों और सहजता को नष्ट करके व्यक्तियों को विभाजित कर देता है, जिससे राजनीतिक कार्रवाई की क्षमता समाप्त हो जाती है।

बुराई की तुच्छता (येरुशलम में इचमन):

- यह अवधारणा एडोल्फ इचमैन के मुकदमे पर उनकी रिपोर्ट से उभरी, जो कि होलोकॉस्ट की रसद के लिए जिम्मेदार एक उच्च पदस्थ नाजी अधिकारी था।
- अरेंड्ट ने विवादास्पद रूप से तर्क दिया कि इचमैन एक राक्षसी या राक्षसी परपीड़क के बजाय, भयावह रूप से सामान्य, एक साधारण नौकरशाह था।
- उन्होंने तर्क दिया कि उसकी बुराई "विचारहीनता" से उपजी है - दूसरों के परिप्रेक्ष्य से सोचने में असमर्थता, नियमों के प्रति उथली अनुपालन, तथा नौकरशाही प्रणाली के भीतर आदेशों के प्रति अविचलित आज्ञाकारिता।
- इसका मतलब यह नहीं था कि वह निर्दोष था, बल्कि यह कि उसकी बुराई "सामान्य" थी - साधारण, अधिकारी जैसी - गंभीर या शैतानी नहीं।
- यह अवधारणा अत्यधिक विवादास्पद थी, कुछ आलोचकों ने उन पर आइकमन को माफ करने या यहां तक कि यहूदी नेताओं को दोषी ठहराने का आरोप लगाया था।
- अरेंड्ट ने अपना तर्क कायम रखते हुए इस बात पर बल दिया कि अविचारी पदाधिकारियों द्वारा किया गया यह नया प्रकार का "प्रशासनिक नरसंहार" आधुनिक प्रणालियों की एक भयावह विशेषता है।

क्रांति (क्रांति पर):

- इस कार्य में, अरेंड्ट ने अमेरिकी क्रांति की तुलना फ्रांसीसी क्रांति से की है तथा अलग-अलग मूल्यांकन प्रस्तुत किए हैं।
- वह अमेरिकी क्रांति की सराहना करती हैं, क्योंकि इसका मुख्य ध्यान राजनीतिक स्वतंत्रता की स्थापना और नागरिक भागीदारी के लिए एक नया सार्वजनिक स्थान तैयार करने पर था।
- उन्होंने इसे "स्वतंत्रता की कहानी" के रूप में देखा, हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि यह चल रही नागरिक कार्रवाई के लिए व्यापक अवसर प्रदान करने में विफल रही।
- वह फ्रांसीसी क्रांति की आलोचना करती हैं क्योंकि इसकी प्रगति "सामाजिक प्रश्न" - गरीबी और भौतिक आवश्यकता की समस्या - से प्रभावित हो गई थी।
- उन्होंने तर्क दिया कि इस फोकस के कारण आतंक का राज पैदा हुआ और अंततः स्वतंत्रता की स्थिर संस्थाएं स्थापित करने में विफलता मिली। उन्होंने इसे "आवश्यकता की कहानी" कहा।

- अरेंड्ट के अनुसार, एक सच्ची क्रांति का लक्ष्य "स्वतंत्रता का गठन" है - सार्वजनिक कार्रवाई के लिए टिकाऊ संस्थाओं का निर्माण - न कि केवल उत्पीड़न से मुक्ति या भौतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि।

हन्ना अरेंड्ट की आलोचना – विचारक-वार

1. जुर्गेन हेबरमास – संस्थागत फोकस का अभाव

- **आलोचना:** अरेंड्ट सार्वजनिक कार्रवाई को आदर्श मानते हैं लेकिन औपचारिक लोकतांत्रिक संस्थाओं की उपेक्षा करते हैं।
- उन्होंने तर्क दिया कि विमर्शात्मक लोकतंत्र (सार्वजनिक संवाद के लिए नियम) अरेंड्ट की स्वतःस्फूर्त राजनीतिक कार्रवाई की तुलना में अधिक यथार्थवादी है।
- अरेंड्ट द्वारा परिषदों पर दिए गए जोर में शासन के लिए व्यावहारिक संरचना का अभाव है।

2. शेल्डन वोलिन - बहुत अभिजात्यवादी और लोकतंत्र विरोधी

- आलोचना: अरेंड्ट की राजनीति की दृष्टि अभिजात्यवादी है और सामान्य राजनीतिक प्रक्रियाओं को बाहर रखती है।
- उन पर ग्रीक शैली की राजनीति को रोमांटिक बनाने और मतदान या पार्टी राजनीति जैसी आधुनिक लोकतांत्रिक भागीदारी की अनदेखी करने का आरोप लगाया गया है।
- उनका दृष्टिकोण प्रेरणादायक है, लेकिन औसत नागरिकों के लिए सुलभ नहीं है।

3. बोनी होनिग - संघर्ष और शक्ति की उपेक्षा

- आलोचना: अरेंड्ट राजनीति में सहमति और सामंजस्य पर अत्यधिक जोर देते हैं।
- होनिग का तर्क है कि वास्तविक राजनीति में केवल सार्वजनिक संवाद ही नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धा, संघर्ष और व्यवधान भी शामिल होता है।
- अधिक संघर्षपूर्ण लोकतंत्र का आह्वान (चैंटल माउफ़े जैसे विचारकों से प्रेरित)।

4. सुसान मोलर ओकिन - लिंग आलोचना

- आलोचना: अरेंड्ट निजी और सार्वजनिक जीवन के बीच एक कठोर विभाजन बनाए रखते हैं।
- यह पृथक्करण निजी क्षेत्र (घर, परिवार) में लिंग आधारित उत्पीड़न को नजरअंदाज करता है।
- अरेंड्ट इस बात पर विचार करने में विफल रहे कि पितृसत्ता महिलाओं के लिए राजनीतिक कार्रवाई को कैसे सीमित करती है।

---

5. माइकल वाल्ज़र - यूटोपियन और एब्सट्रैक्ट

- आलोचना: एरेन्ड्ट का जीवंत सार्वजनिक स्थान का विचार बहुत काल्पनिक है और इसमें ऐतिहासिक आधार का अभाव है।
- उनका दावा है कि वह आधुनिक समाजों में राजनीतिक समझौते और बहुलवाद की व्यावहारिक वास्तविकताओं की अनदेखी करती हैं।
- राजनीति को वितरण, कल्याण और कानूनी संरचनाओं को भी संभालना चाहिए - न कि केवल विशुद्ध कार्रवाई को।

---

6. उत्तर-औपनिवेशिक आलोचना - यूरोसेंट्रिक लेंस

- अरेंड्ट की आलोचना इस बात के लिए की गई है:
  - यूरोकेन्द्रीयता - औपनिवेशिक संदर्भों की अनदेखी करते हुए ग्रीक पोलिस का महिमामंडन करना।
  - सीमित समावेशन - गैर-पश्चिमी, उपनिवेशित या हाशिए पर पड़े लोगों की राजनीतिक एजेंसी को संबोधित नहीं करता है।
- उदाहरण: इचमैन मुकदमे के दौरान अरेंड्ट की विवादास्पद टिप्पणियों पर होलोकॉस्ट पीड़ितों और उपनिवेश-विरोधी संघर्षों के प्रति असंवेदनशील होने का आरोप लगाया गया।

10 अभ्यास एमसीक्यू

प्रश्न 1. सूची I (अरस्तू की सरकार के सामान्य रूप) को सूची II (उनके विकृत रूप) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (सामान्य रूप)	सूची II (विकृत रूप)

(ए) राजतंत्र	(I) लोकतंत्र
(बी) अभिजात वर्ग	(II) अत्याचार
(सी) राजनीति	(III) कुलीनतंत्र

कोड:
(1) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III)
(2) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(III), (सी)-(आई)
(3) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(II)
(4) (ए) - (द्वितीय), (बी) - (आई), (सी) - (III)

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- अरस्तू ने संविधानों को शासकों की संख्या और उनके उद्देश्य (सामान्य भलाई या स्व-हित) के आधार पर वर्गीकृत किया था।
- राजतंत्र एक गुणी व्यक्ति द्वारा सर्वजन हिताय के लिए किया गया शासन है; इसका विकृत रूप, जहां शासक अपने स्वार्थ के लिए शासन करता है, अत्याचार है।
- अभिजाततंत्र कुछ गुणी व्यक्तियों द्वारा सामान्य भलाई के लिए किया जाने वाला शासन है; इसका विकृत रूप, जहां कुछ धनी लोग अपने स्वार्थ के लिए शासन करते हैं, कुलीनतंत्र है।
- राजनीति कई लोगों द्वारा किया जाने वाला शासन है, जो सामान्य भलाई के लिए हितों (अक्सर मध्यम वर्ग) को संतुलित करता है; इसका विकृत रूप, जहां गरीब जनता अपने स्वार्थ के लिए शासन करती है, लोकतंत्र है (अरस्तू के वर्गीकरण में)।
- यह वर्गीकरण अरस्तू के राजनीतिक विश्लेषण का आधार है, जो उनकी कृति *राजनीति में है*।
- राजनीतिक स्थिरता और आदर्श राज्य पर उनके विचारों को समझने के लिए इस अंतर को समझना महत्वपूर्ण है।

सूची I (अरस्तू के राजनीतिक दर्शन से अवधारणाएँ) को सूची II (उनके विवरण) के साथ सुमेलित करें **:**

सूची I (संकल्पना)	**सूची II (विवरण)**
(ए) प्राकृतिक रूप में राज्य	(I) योग्यता या योगदान के अनुसार वस्तुओं, धन और सम्मान के वितरण से संबंधित है।
(बी) वितरणात्मक न्याय	(II) राज्य एक जैविक विकास है, न कि एक कृत्रिम रचना, जो परिवार और गांव से विकसित होता है।

(सी) गुलामी का सिद्धांत	(III) मध्यम वर्ग हावी रहता है, जिससे संतुलन बना रहता है और अहंकार या ईर्ष्या की प्रवृत्ति कम होती है।
(डी) स्थिर राजनीति	(IV) कुछ व्यक्ति "स्वभाव से गुलाम" होते हैं, जिनमें बौद्धिक वरिष्ठों द्वारा शासित श्रम के लिए उपयुक्त शारीरिक शक्ति होती है।

कोड:
(1) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III), (डी)-(IV)
(2) (ए)-(II), (बी)-(आई), (सी)-(IV), (डी)-(III)
(3) (ए)-(III), (बी)-(IV), (सी)-(I), (D)-(II)
(4) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(II), (डी)-(I)

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- अरस्तू ने राज्य को एक प्राकृतिक संगठन के रूप में देखा, जो प्राकृतिक वृद्धि और विकास का परिणाम है, जो परिवार से शुरू होकर गांव और अंततः राज्य में परिवर्तित होता है।
- वितरणात्मक न्याय, एक प्रकार का विशेष न्याय है, जो इस बात से संबंधित है कि राज्य अपने नागरिकों के बीच वस्तुओं, धन, सम्मान और पदों का वितरण, आदर्श रूप से योग्यता या योगदान के अनुसार कैसे करता है।
- अरस्तू के दासता के सिद्धांत ने इसे आवश्यक और स्वाभाविक माना, तथा तर्क दिया कि कुछ व्यक्ति स्वभाव से दास होते हैं, उनमें श्रम के लिए शारीरिक शक्ति होती है, तथा उनका शासन बौद्धिक शक्ति वाले स्वामियों द्वारा किया जाना चाहिए।
- अरस्तू ने राजनीति को, जिसमें मध्यम वर्ग का प्रभुत्व हो, सबसे अधिक स्थिर और सुव्यवस्थित रूप माना है, क्योंकि मध्यम वर्ग में अमीरों के अहंकार या गरीबों की ईर्ष्या की प्रवृत्ति कम होती है, जिससे एक प्राकृतिक संतुलन बना रहता है।
- ये अवधारणाएं अरस्तू के नैतिक और राजनीतिक ढांचे को समझने के लिए केंद्रीय हैं, जैसा कि *राजनीति* और *निकोमैचेन एथिक्स जैसे कार्यों में विस्तृत है*।
- दास प्रथा के प्रति उनका औचित्य और मिश्रित संविधान (राजनीति) के प्रति उनकी प्राथमिकता प्राचीन ग्रीस के सामाजिक मानदंडों और दार्शनिक जिज्ञासाओं को प्रतिबिंबित करती है।

प्रश्न 3. अभिकथन (A): जॉन रॉल्स का तर्क है कि न्याय के सिद्धांतों को "अज्ञानता के पर्दे" के पीछे चुना जाना चाहिए।
कारण (R): "अज्ञानता का पर्दा" यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी व्यक्ति न्याय के सिद्धांतों को अपनी विशिष्ट परिस्थितियों, सामाजिक स्थिति, प्रतिभा या अच्छे जीवन की अवधारणा के लिए अनुचित लाभ पहुंचाने के लिए तैयार नहीं कर सकता।
कोड:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

उत्तर : (1)
स्पष्टीकरण:

- जॉन रॉल्स ने अपनी पुस्तक *'ए थ्योरी ऑफ जस्टिस' में* न्याय के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए एक काल्पनिक विचार प्रयोग के रूप में "मूल स्थिति" का परिचय दिया है।
- इस मूल स्थिति की एक महत्वपूर्ण विशेषता "अज्ञानता का पर्दा" है, जहां व्यक्तियों को उनकी अपनी विशेष विशेषताओं के प्रति अनभिज्ञ बना दिया जाता है।
- वे अपनी सामाजिक या आर्थिक स्थिति, जाति, लिंग, धर्म, प्राकृतिक प्रतिभा या अच्छे जीवन की अपनी व्यक्तिगत अवधारणा के बारे में नहीं जानते।
- जैसा कि तर्क में कहा गया है, अज्ञानता के आवरण का उद्देश्य सिद्धांतों के चयन में निष्पक्षता सुनिश्चित करना है।
- चूंकि व्यक्ति अपनी स्थिति नहीं जानता, इसलिए वह ऐसे सिद्धांतों का चयन नहीं कर सकता, जो उसके या उसके समूह के लिए अनुचित रूप से लाभकारी हों।
- इस प्रकार, कारण (R) सीधे और सही ढंग से रॉल्स के सिद्धांत में "अज्ञानता के पर्दे" (A) के कार्य और उद्देश्य को समझाता है।

प्रश्न 4. सूची I (जॉन रॉल्स के "ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस" में प्रमुख अवधारणाएँ) को सूची II (उनके मूल अर्थ) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (संकल्पना)	**सूची II (मूल अर्थ)**
(ए) मूल स्थिति	(I) सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ तभी स्वीकार्य हैं जब उनसे समाज के सबसे कम सुविधा प्राप्त सदस्यों को लाभ हो।
(बी) समान बुनियादी स्वतंत्रताएं	(II) पूर्ण समानता की एक काल्पनिक स्थिति जहाँ स्वतंत्र और तर्कसंगत व्यक्ति न्याय के सिद्धांतों का चयन करते हैं।
(सी) अंतर सिद्धांत	(III) पद और पद सभी के लिए खुले होने चाहिए तथा ऐसी शर्तें होनी चाहिए कि सभी को उनके लिए प्रतिस्पर्धा करने का वास्तविक अवसर मिले।
(डी) अवसर की निष्पक्ष समानता	(IV) प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता की सबसे व्यापक प्रणाली का समान अधिकार है जो सभी के लिए समान प्रणाली के अनुकूल हो।

कोड:

(1) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(IV), (सी)-(आई), (डी)-(III)
(2) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III), (डी)-(IV)
(3) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(II), (डी)-(I)
(4) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(IV), (डी)-(II)

उत्तर : (1)
स्पष्टीकरण:

- मूल स्थिति एक काल्पनिक विचार प्रयोग है, प्रतिभागियों के बीच पूर्ण समानता की स्थिति, जहां स्वतंत्र और तर्कसंगत व्यक्ति अपने समाज के लिए न्याय के बुनियादी सिद्धांतों का चयन करते हैं।
- समान बुनियादी स्वतंत्रता सिद्धांत (प्रथम सिद्धांत) में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को समान बुनियादी स्वतंत्रता की सबसे व्यापक कुल प्रणाली पर समान अधिकार होना चाहिए, जो सभी के लिए स्वतंत्रता की समान प्रणाली के साथ संगत हो।
- अंतर सिद्धांत, जो दूसरे सिद्धांत का हिस्सा है, इस बात पर जोर देता है कि सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वे समाज के सबसे कम सुविधा प्राप्त सदस्यों के लिए अधिकतम लाभकारी हों।
- अवसर की निष्पक्ष समानता, जो दूसरे सिद्धांत का भी हिस्सा है, के लिए यह आवश्यक है कि पद और पद सभी के लिए खुले हों, बशर्ते कि समाज सभी को प्रतिस्पर्धा का निष्पक्ष अवसर देने के लिए बुनियादी साधन (जैसे, शिक्षा) उपलब्ध कराए।
- ये अवधारणाएं रॉल्स के "निष्पक्षता के रूप में न्याय" के मूल का निर्माण करती हैं और इन्हें शाब्दिक रूप से व्यवस्थित किया गया है, जिसमें स्वतंत्रता सिद्धांत को प्राथमिकता दी गई है।
- रॉल्स ने इन सिद्धांतों को उपयोगितावाद के विकल्प के रूप में विकसित किया, जिसका उद्देश्य व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करना और सामाजिक वस्तुओं का न्यायोचित वितरण सुनिश्चित करना था।

Q5. सूची I (जॉन रॉल्स के सिद्धांत के आलोचक) को सूची II (उनकी प्राथमिक आलोचना) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (आलोचक)	**सूची II (प्राथमिक आलोचना)**
(ए) माइकल सैंडेल	(I) रॉल्स का सिद्धांत पश्चिमी उदारवादी व्यक्तिवाद पर आधारित है और समूह अधिकारों को ध्यान में रखने में विफल रहता है।
(बी) भीखू पारेख	(II) रॉल्स का "मुक्त आत्म" का विचार अवास्तविक है; व्यक्ति सामाजिक रूप से अंतर्निहित हैं।
(सी) जीए कोहेन	(III) रॉल्स परिवार जैसे निजी क्षेत्र में लैंगिक असमानताओं की उपेक्षा करते हैं।

(डी) सुसान मोलर ओकिन	(IV) रॉल्स का अंतर सिद्धांत अभी भी असमानता और पूंजीवादी संरचनाओं को सहन करता है।

कोड:
(1) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III), (डी)-(IV)
(2) (ए)-(II), (बी)-(आई), (सी)-(IV), (डी)-(III)
(3) (ए)-(III), (बी)-(IV), (सी)-(I), (D)-(II)
(4) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(II), (डी)-(I)

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- माइकल सैंडल का तर्क है कि मूल स्थिति में रॉल्स का "मुक्त आत्म" का विचार अवास्तविक है क्योंकि व्यक्तियों को उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान से अलग नहीं किया जा सकता है।
- भीखू पारेख, बहुसंस्कृतिवादी दृष्टिकोण से, रॉल्स के सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहते हैं कि यह पश्चिमी उदारवादी व्यक्तिवाद पर आधारित है तथा इसमें गैर-पश्चिमी मूल्यों और अल्पसंख्यकों के लिए समूह अधिकारों के महत्व को पर्याप्त रूप से शामिल नहीं किया गया है।
- जी.ए. कोहेन एक मार्क्सवादी आलोचना प्रस्तुत करते हुए दावा करते हैं कि रॉल्स का अंतर सिद्धांत अभी भी अस्वीकार्य स्तर की असमानता और पूंजीवाद की मौलिक संरचनाओं को सहन करता है, तथा आर्थिक समानता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।
- सुसान मोलर ओकिन ने नारीवादी आलोचना प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया कि रॉल्स निजी क्षेत्र, विशेष रूप से परिवार में लैंगिक असमानताओं को काफी हद तक नजरअंदाज करते हैं, तथा एक न्यायपूर्ण पारिवारिक संरचना की कल्पना करते हैं जो उत्पीड़न को छुपाती है।
- ये आलोचनाएँ रॉल्स के न्याय के प्रभावशाली सिद्धांत के समक्ष उपस्थित विविध दार्शनिक चुनौतियों पर प्रकाश डालती हैं।
- दस्तावेज़ में इन विचारकों को स्पष्ट रूप से सूचीबद्ध किया गया है तथा रॉल्स के विरुद्ध उनके मुख्य तर्कों का सारांश दिया गया है।

गतिविधि के भीतर उच्चतम और सबसे विशिष्ट मानवीय गतिविधि है ।
कारण (R): अरेंड्ट के अनुसार, "क्रिया" में जैविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए श्रम करना और टिकाऊ वस्तुओं का निर्माण करना शामिल है, जो मुख्य रूप से निजी क्षेत्र में होता है।
कोड:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

उत्तर : (3)

स्पष्टीकरण:

- अभिकथन (A) सत्य है। हन्ना अरेंड्ट ने *द ह्यूमन कंडीशन में तीन मूलभूत मानवीय गतिविधियों को विटा एक्टिवा* में विभाजित किया है : श्रम , कार्य और क्रिया। वह क्रिया को मानवीय स्वतंत्रता और विशिष्टता का सर्वोच्च रूप और सच्चा क्षेत्र मानती है।
- कारण (R) गलत है। जबकि अरेंड्ट " श्रम " (जैविक जीविका के लिए गतिविधियाँ) और "काम" (टिकाऊ वस्तुओं का निर्माण) पर चर्चा करते हैं, ये "कार्रवाई" से अलग हैं।
- इसके अलावा, "कार्रवाई" को लोगों के बीच प्रत्यक्ष रूप से घटित होने वाली गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो मानव बहुलता और वाणी और कर्म में आत्म-प्रकटीकरण के अनुरूप होती है, और यह विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में घटित होती है, न कि प्राथमिक रूप से निजी क्षेत्र में।
- श्रम निजी क्षेत्र और आवश्यकता से जुड़ा है, जबकि काम मानवीय कृत्रिमता का निर्माण करता है।
- क्रिया राजनीति और स्वतंत्रता का क्षेत्र है, जो सार्वजनिक रूप से दूसरों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से साकार होती है।
- इसलिए, तर्क "कार्रवाई" और श्रम , काम और सार्वजनिक/निजी भेद के साथ उसके संबंध को गलत तरीके से चित्रित करता है।

प्रश्न 7. सूची I (हन्ना अरेंड्ट के *वीटा एक्टिवा* के घटक) को सूची II (उनकी प्राथमिक विशेषताएँ) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (घटक)	**सूची II (प्राथमिक विशेषता)**
(ए) श्रम	(I) चीजों की एक टिकाऊ, कृत्रिम दुनिया बनाना; *होमो फैबर का क्षेत्र*।
(बी) कार्य	(II) जैविक जीवन और अस्तित्व के लिए गतिविधियाँ; चक्रीय, दोहरावदार, *पशु श्रम का क्षेत्र*।
(सी) कार्रवाई	(III) लोगों के बीच होने वाली घटनाएं; राजनीति, भाषण, आत्म-प्रकटीकरण और जन्म का क्षेत्र ।

कोड:

(1) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III)

(2) (ए) - (द्वितीय), (बी) - (आई), (सी) - (III)

(3) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(II)

(4) (ए)-(आई), (बी)-(III), (सी)-(II)

उत्तर : (2)

स्पष्टीकरण:

- हन्ना अरेंड्ट श्रम को जैविक जीवन और अस्तित्व के लिए आवश्यक गतिविधियों के रूप में परिभाषित करते हैं, जो मानव शरीर की जरूरतों के अनुरूप है। यह चक्रीय, दोहराव वाला है, और इसके उत्पादों का जल्दी से उपभोग किया जाता है, जो *पशु श्रम* की अवधारणा के साथ संरेखित है ।
- काम से तात्पर्य ऐसी गतिविधियों से है जो प्राकृतिक वातावरण से अलग, चीजों की एक कृत्रिम, टिकाऊ दुनिया बनाती हैं, जैसे घर बनाना या कला का सृजन करना। यह *होमो फैबर* (निर्माता मनुष्य) का क्षेत्र है।
- क्रिया में ऐसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जो बिना किसी मध्यस्थ के लोगों के बीच सीधे होती हैं। यह मानवीय बहुलता, भाषण, आत्म-प्रकटीकरण, नई चीजें शुरू करने की क्षमता (जन्मजात) से मेल खाती है, और राजनीतिक जीवन का मूल है।
- अरेंड्ट का तर्क है कि आधुनिकता ने समस्यात्मक रूप से श्रम और कार्य को कार्रवाई से ऊपर उठा दिया है, जिससे सार्वजनिक क्षेत्र कम हो गया है।
- *विटा एक्टिवा* के ये तीन घटक *द ह्यूमन कंडीशन* में उनके विश्लेषण के केंद्र में हैं ।
- इस त्रय को समझना मानव अस्तित्व और राजनीति पर अरेंड्ट के अद्वितीय दृष्टिकोण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 8. अभिकथन (A): हन्ना अरेंड्ट के अनुसार, शक्ति एक समूह के सहयोग से कार्य करने से संबंधित होती है तथा यह सहयोगात्मक होती है, दबावपूर्ण नहीं।
कारण (R): अरेंड्ट ने हिंसा को साधन के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें शक्ति को बढ़ाने के लिए उपकरणों का उपयोग किया जाता है, और तर्क दिया है कि हिंसा शक्ति को नष्ट कर सकती है।
कोड:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

उत्तर : (2)

स्पष्टीकरण:

- कथन (A) सत्य है। हन्ना अरेंड्ट सत्ता को एक समूह के रूप में मानती हैं जो मिलकर काम करता है; यह तब पैदा होती है जब लोग एक सामान्य उद्देश्य के लिए एक साथ आते हैं और जब वे बिखर जाते हैं तो गायब हो जाती है। वह स्पष्ट रूप से कहती हैं कि सत्ता सहयोगात्मक होती है न कि बलपूर्वक, जो वैध सरकार का आधार बनती है।
- कारण (R) भी सत्य है। अरेंड्ट शक्ति को हिंसा से अलग करती हैं। वह हिंसा को एक साधन के रूप में परिभाषित करती हैं, जो प्राकृतिक शक्ति को बढ़ाने के लिए उपकरणों (औजारों, हथियारों) का उपयोग करती है, और कहती है कि हिंसा शक्ति को नष्ट कर सकती है।

- जबकि दोनों कथन एरेन्ड्ट की अलग-अलग अवधारणाओं को सटीक रूप से दर्शाते हैं, (आर) का हिंसा का वर्णन और सत्ता से उसका संबंध बताता है कि सत्ता क्या *नहीं है* और इसे कैसे कम किया जा सकता है। यह सीधे तौर पर यह नहीं बताता है कि सत्ता स्वाभाविक रूप से सहकारी या समूह-आधारित *क्यों है जैसा कि (ए) में कहा गया है।*
- (A) अरेंड्ट के लिए शक्ति का सार परिभाषित करता है , जबकि (R) एक विपरीत अवधारणा (हिंसा) और शक्ति पर इसके प्रभाव का वर्णन करता है।
- यह अंतर इस बात पर प्रकाश डालता है कि अरेंड्ट के लिए, केवल हिंसा द्वारा शासन में वह वैधता नहीं होती जो सामूहिक शक्ति से आती है।
- दोनों कथन सही हैं और राजनीतिक घटनाओं के बारे में अरेंड्ट के सूक्ष्म दृष्टिकोण को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

Q9. अरस्तू ने निम्नलिखित में से किसके बारे में विवादास्पद तर्क दिया था कि उन्हें नागरिक नहीं होना चाहिए क्योंकि उनके काम में सदाचार के लिए कोई अवकाश नहीं होता है?
(1) योद्धा और पुजारी
(2) धनी ज़मींदार और प्रशासक
(3) कारीगर और कृषक
(4) दार्शनिक और मजिस्ट्रेट

उत्तर : (3)
स्पष्टीकरण:

- अरस्तू ने अपने आदर्श राज्य में कई वर्गों की पहचान की, जिनमें कारीगर, कृषक, योद्धा, धनी, पुजारी और प्रशासक शामिल थे।
- उन्होंने तर्क दिया कि राज्य के सुचारू रूप से कार्य करने तथा नागरिकों को "अच्छा जीवन" प्राप्त करने के लिए, नागरिकों को राजनीति में भाग लेने तथा सद्गुण विकसित करने के लिए अवकाश की आवश्यकता होती है।
- विवादास्पद रूप से, अरस्तू ने तर्क दिया कि कारीगरों और कृषकों (शारीरिक मजदूरों) को पूर्ण नागरिक नहीं होना चाहिए।
- उनका तर्क था कि उनके काम की प्रकृति बहुत कठिन थी और उनके पास अवकाश का कोई समय नहीं था, जो उनके अनुसार सद्गुणों के विकास और नागरिक कर्तव्यों के निर्वहन के लिए आवश्यक था।
- यह दृष्टिकोण प्राचीन यूनानी विचारधारा की अभिजात्य प्रवृत्तियों को प्रतिबिंबित करता है, जहां नागरिकता को अक्सर संपत्ति के स्वामित्व और शारीरिक श्रम से मुक्ति से जोड़ा जाता था।
- यह बहिष्कार अरस्तू के राजनीतिक चिंतन का एक पहलू है जिसकी आधुनिक दृष्टिकोण से काफी आलोचना हुई है।

प्रश्न 10. हन्ना अरेंड्ट के अधिनायकवाद के विश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

(A) अधिनायकवाद का लक्ष्य व्यक्तिगत जीवन के हर पहलू पर पूर्ण, स्थायी प्रभुत्व स्थापित करना है।
(बी) यह पारंपरिक अत्याचारों के समान, मुख्य रूप से राजनीतिक विरोधियों के विरुद्ध संगठित आतंक का प्रयोग करता है।
(सी) यह अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली विचारधारा और निरंतर, गतिशील गति पर निर्भर करता है।
(डी) एरेन्ड्ट ने अधिनायकवाद को आंशिक रूप से 19वीं सदी के यहूदी-विरोध और साम्राज्यवाद में निहित माना।
(ई) यह राजनीतिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक बंधन और सहजता को मजबूत करता है।
वह सही विकल्प चुनें जिसमें सभी सही कथन शामिल हों:
(1) केवल (ए), (सी), और (डी)
(2) केवल (ए), (बी), (सी), और (डी)
(3) केवल (बी), (डी), और (ई)
(4) केवल (A), (C), (D), और (E)

उत्तर : (1)
स्पष्टीकरण:

- कथन (A) सही है। अरेंड्ट ने तर्क दिया कि अधिनायकवाद का उद्देश्य व्यक्तिगत जीवन के हर पहलू पर कुल, स्थायी वर्चस्व स्थापित करना है, जो इसे पारंपरिक अत्याचारों से अलग करता है।
- कथन (B) गलत है। अधिनायकवाद केवल राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ ही नहीं, बल्कि पूरी आबादी के खिलाफ संगठित आतंक का उपयोग करता है, जो कि साधारण अत्याचार से एक महत्वपूर्ण अंतर है।
- कथन (C) सही है। यह अपने नियंत्रण को बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली विचारधारा (जैसे, जाति वर्चस्व) और निरंतर, गतिशील गति पर निर्भर करता है।
- कथन (D) सही है। अरेंड्ट ने अधिनायकवाद की जड़ें 19वीं सदी के यहूदी-विरोध (एक वैचारिक मॉडल प्रदान करना) और साम्राज्यवाद (प्रभुत्व के उपकरण के रूप में नस्लवाद और नौकरशाही का परिचय देना) में खोजी।
- कथन (E) गलत है। अधिनायकवाद सामाजिक बंधनों और सहजता को नष्ट करके व्यक्तियों को परमाणुकृत करता है, जिससे राजनीतिक कार्रवाई की क्षमता समाप्त हो जाती है।
- *द ओरिजिन्स ऑफ टोटालिटेरियनिज़्म* में अरेंड्ट के विश्लेषण को सटीक रूप से दर्शाते हैं ।